शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 8 | उदयपुर सोमवार 01 मई 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कला की सार्थकता जुड़ने में

-रामनारायण उपाध्याय-

पता नहीं क्यों जीवन से गीत का रिश्ता टूटता जा रहा है। आज आदमी बाथरूम में गुनगुनाता है, लेकिन अनंत आकाश के नीचे मुक्त कण्ठ से गाता नहीं। जबसे हमने गीत को टेप में बन्द किया है, हमारा स्वयं का जीवन भी कैद हो उठा है। गहनों में लदी नारी में जो सौंदर्य है, वह संग्रहालय में रखे गहनों में कहां? आज हमारी स्थिति यह है कि कोई अच्छा-सा गीत सुना तो उसे टेप में बन्द कर लिया। कहीं ऐसा न हो कि किसी दिन टीवी पर आदमी को भोजन करते देखकर अपना पेट भरा होने जैसा अहसास करने लगें।

केश, नाखून, दांत और मूर्ति अपने स्थान से विलग होने पर अपना मूल्य खो देते हैं। जब तक केश, नाखून और दांत मानव शरीर से जुड़े रहते हैं तभी तक उनका महत्व है। स्थान मुक्त होते ही वे कुए में गिरें या गड्ढे में, कोई नहीं पूछता। अत: कहा जा सकता है कि किसी भी कला की सार्थकता उसके जुड़ने में है, उखड़ने में नहीं। हमारे यहां खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती और खण्डित आदमी को पूजा का अधिकार नहीं रह जाता। कहावत भी है- 'उतरी हिंगाण मंदर पाछै' अर्थात मूर्ति का महत्व अपनी जगह छोड़ने पर नहीं रहता। उसे मंदिर के पीछे धकेल दी जाती है।

कला की सार्थकता भी जन-जीवन और जमीन से जुड़कर ही रही है। अपनी जमीन से उखड़े वटवृक्ष की तरह उसे गमले में रोपी नहीं जा सकती। लोककलायें हमारे जीवन में मांगल्य न्यौतने आई हैं। स्त्री के सूने भाल की तरह, कोई भी कलाकार भींत को सूनी नहीं देख सकता। जब भी नई बहू घर में आती है तो उसके द्वारा घर की दीवार के दोनों ओर चित्र बनाने की परम्परा रही है। हमारे व्रत, उत्सव और त्यौहार बिना गीत या चित्र के सूने माने जाते हैं। जिस घर में गीत नहीं गूंजते या धुंआ नहीं उठता, वह घर, घर नहीं रह जाता।

लक्ष्मी का उत्पादन कैसे संभव है? लक्ष्मी पर निरंतर जल का अभिषेक करने वाले दो हाथी बादलों के प्रतीक हैं। उनके सामने जलने वाला नन्हा सा माटी का दीया मुसीबत में भी मुस्कराने वाले जीवन का संदेश सुनाता है। जहां यह सब हो उसके आंगन में मोर नाचेगा।

सावन के आते ही बादलों के साथ स्त्री के मन में भी कला के अंकूर फूटने लगते हैं और वह घर की दीवार को कैनवास के रूप में लेकर उसे लाल गेरु से पोतकर उस पर तूअर काठी के डंठल में लिपटी रुई के ब्रश से कटोरियों में घोल

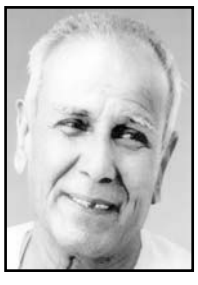

नीले, पीले, लाल और हरे रंग से चित्रांकन करने में जुट जाती है। बीच में बच्चों सहित तीन स्त्रियों का चित्र मां के रूप में नारी के पूर्णत्व का माना जाता है। ऊपर शाश्वत जीवन के प्रतीक चांद और सूरज बनाये जाते हैं और नीचे मृत्युदंश का प्रतीक बिच्छू होता है। दोनों ओर पांच हथेलियों के चित्र स्वास्तिक के प्रतीक माने गये हैं। दीवार के एक ओर दही बिलोने वाली, चक्की पीसने वाली और रोटी बनाने वाली गृहिणियों का चित्र होता है तो दूसरी ओर एक ही थाली में भोजन करने वाले भाई-बहनों का चित्र संयुक्त परिवार का दर्शन करा जाता है।

कुंवारे के महीने में प्रतिदिन बढ़ने वाले चन्द्रमा के साथ छोटी-छोटी बालिकाओं के द्वारा दीवार पर गोबर और फूल-पत्तियों से अंकित संजा का चित्र सचमुच उतरती हुई सांझ का आभास करा जाता है। सांझ के उतरते झुटपुटे में कुंवारी कन्याओं द्वारा चित्र की आरती उतारी जाती है, तो स्वयं संध्या भी अपने चित्र को देखकर दो घड़ी स्तब्ध-सी खड़ी रह जाती है।

नृत्य, संगीत और कला ने मनुष्य को संस्कारनिष्ठ बनाने में अपना अपूर्व योगदान दिया है। गीत की अंगुली पकड़कर ही आदमी ने अनंत के ओर-छोर नापे और नौखण्ड पृथ्वी की यात्रा की है। चित्रांकन की कूंची पकड़कर ही उसने अपने सपनों को मूर्त स्वरूप दिया है।

पता नहीं क्यों जीवन से गीत का रिश्ता टूटता जा रहा है। आज आदमी बाथरूम में गुनगुनाता है, लेकिन अनंत आकाश के नीचे मुक्त कण्ठ से गाता नहीं। जबसे हमने गीत को टेप में बन्द किया है, हमारा स्वयं का जीवन भी कैद हो उठा है। एक आदिवासी की झोंपड़ी में बने चित्र में जीवन का जैसा स्पंदन होता है, वैसा संग्रहालय में रखे कैनवास पर बने निर्जीव चित्र में कहां? गांधीजी ने कहा था- 'मैं तो ऐसी कला का उपासक हूं जिससे आदमी के चेहरे पर रक्त की दो बूंदें बने।'

गहनों में लदी नारी में जो सौंदर्य है, वह संग्रहालय में रखे गहनों में कहां? पता नहीं हमारी संग्रहालयवृत्ति हमें कहां ले जायेगी? आज हमारी स्थिति यह है कि कोई अच्छा-सा गीत सुना तो उसे टेप में बंद कर लिया। कोई सुन्दर दृश्य देखा तो उसे कैमरे में कैद कर लिया। कोई मूर्ति दिखी तो उसे संग्रहालय में सहेंज कर रख दिया। कहीं मैच हुआ तो उसे टीवी पर देख खुश हो लिए। किसी ने स्नान किया तो स्वीमिंग पुल का टिकिट लेकर उसे देखने भाग उठे। कहीं ऐसा न हो कि किसी दिन टीवी पर आदमी को भोजन करते देखकर अपना पेट भरा होने जैसा अहसास करने लगें।

अकल्पनीय अंकों से कल्पित का करिश्मा

जेईई मेन में हासिल किए शत-प्रतिशत अंक

उदयपुर। उदयपुर के छात्र कल्पित वीरवाल ने जेईई मेन 2017 परीक्षा में टॉप कर इतिहास रच दिया है। ऐसा पहला मौका है जब किसी छात्र ने जेईई मेन्स की परीक्षा में 360 में से 360 अंक प्राप्त किए हैं।

रेजोनेंस उदयपुर सेंटर के डिप्टी जनरल मेनेजर अरूण श्रीमाली एवं एमडीएस स्कूल के निदेशक डॉ. शैलेन्द्र सोमानी ने बताया कि सीबीएसई ने गुरूवार को जोइंट एन्ट्रेंस एक्जामिनेशन (जेईई) मेन 2017 का रिजल्ट घोषित किया जिसमें उदयपुर रेजोनेंस के छात्र कल्पित ने 360 में से 360 अंक हासिल कर इतिहास रचा है। इससे कल्पित के परिवार और शहरवासियों में खुशी का माहौल है।

उन्होंने बताया कि कल्पित ने एनटीएसई के प्रथम चरण में भी राज्य में पहला स्थान प्राप्त किया था। इसके अलावा कल्पित केवीपीवाय मे भी प्रथम रैंक प्राप्त कर चुका है। अब कल्पित के लिए एडवांस परीक्षा बड़ा लक्ष्य है जिसके लिए वह पूरी तरह आत्मविश्वास से भरा हुआ है। कल्पित ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता और गुरुओं को दिया है।

उदयपुर सबसे पसंदीदा शहर

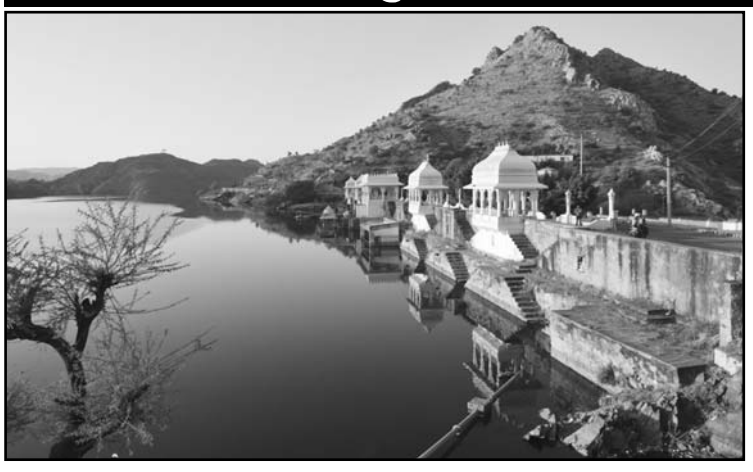

उदयपुर। दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करने वाली झीलों की नगरी ने अपने आकर्षण का लोहा एक बार फिर मनवाया है। आउटलुक ट्रावेलर मेग्जिन के ऑनलाइन सर्वे में राजस्थान को सर्वश्रेष्ठ राज्य एवं उदयपुर को पर्यटन हेतु बेस्ट सिटी के तौर पर चुने जाने से देशी-विदेशी पर्यटकों के बीच प्रदेश व शहर की लोकप्रियता पर एक बार फिर मुहर लगी है। प्रकृति, संस्कृति और हेरिटेज का अनोखा संगम उदयपुर को सबकी पसंदीदा जगह बनाता है। पर्यटन विभाग की उपनिदेशक सुमिता सरोच के अनुसार यहां उपलब्ध विश्वस्तरीय सुविधाएं देश ही नहीं दुनियाभर के लोगों को खींच लाती हैं। उनके अनुसार शाम के वक्त शहर का सौंदर्य देखते ही बनता है। झीलों के किनारे स्थानीय निकायों की ओर से करवाये गए कार्यों ने शहर की सुंदरता में चार चांद लगाए हैं। पर्यटक शाम के नज़ारे देखकर नई ताज़गी महसूस करते हैं। सिटीपैलेस, सज्जनगढ़, सहेलियों की बाड़ी, फतहसागर, पीछोला, दूधतलाई, रोप-वे, गुलाब बाग, सज्जनगढ़ बायलोजिकल पार्क, बड़ी तालाब, मोतीमगरी, बायोडायवर्सिटी पार्क, पुरोहितों का तालाब, शिल्पग्राम, राजीव गांधी पार्क, प्रताप गौरव केंद्र सहित कई ऐसे स्थान है जो पर्यटकों को बरबस आकर्षित करते हैं।

स्मृतियों के शिखर (31) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दो दिन बालकवि बैरागी के साथ (1)

लिखने को किताबों की भूमिका और करने को उनका लोकार्पण। इस उम्र में लोग इसी काम के योग्य समझने लग गये हैं। पहले तो उन पोथियों को पढ़ो। बहुत सी तो पढ़ने जैसी भी नहीं होतीं फिर उन पर लिखो प्रशंसामूलक, ठकुर सुहाता। जो काम अब तक नहीं किया, अनचाहे भी उसे करना पड़ रहा है।

कोई पच्चीस वर्ष पूर्व बालकवि बैरागी के संदर्भ में मैंने लिखा था - कुछ ऐसे भी मित्र होते हैं जो नहीं मिलते हैं मगर हर समय मिलने का एहसास देते हैं। इस एहसास की आत्मीयता, अपनापन और आनंद की अनुभूति ही जीवन की अमृतानुभूति है। इसी अमृतानुभूति से रू-ब-रू होने का पैंतालीस वर्ष बाद सुयोग मिला। प्रसंग था उज्जैन की प्रतिकल्पा नामक संस्था द्वारा सांझीकला पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने का। संगोष्ठी प्रचेता डॉ. शैलेन्द्र शर्मा जानते थे कि अकेलेपन की यात्रा मुझे बड़ा बोझिल बना देती है। अकेले यात्री और अकेले गृहस्थ का जीवन मेरी दृष्टि में अधूरा, एकांगी तथा अलटप्पू का जीवन है। मैंने इस रूप में कभी अपनी यात्रा तथा जीवन को रसहीन गन्ने की पंगेरी नहीं बनने दिया। यों मैंने एकलखोरों का जीवन भी देखा है।

वह दिन 25 सितम्बर 2011 का था। ऐन सुबह मुंह झांकते मैं उदयपुर से टेक्सी द्वारा चलकर ठीक साढ़ा आठ बजे बालकवि बैरागीजी के निवास धापू धाम, नीमच पहुंच गया। वहां ज्योंही टेक्सी की फाटक खुली, धापू धाम की फाटक भी खुलती नजर आई। सामने ही कुर्सी पर बालकवि बिराजमान थे। उन्होंने कुर्सी से उठते ही 'महेन्द्र भाई, धापू धाम में आपका बहुत-बहुत स्वागत' कहकर मुझे अपने हिये से लगा लिया। मैं लाख पसाव धन्य हो गया। वे बोले- मेरी मां के नाम पर इस धाम का नामकरण किया है। आज मैं जो भी कुछ हूं, मेरी मां का प्रताप हूं। मेरी मां को देखना हो तो कोई मुझे देखले। इस धाम के सामने जो जगह खाली दिख रही है वह अंग्रेजों का कब्रगाह है। पता नहीं, वे कौन अंग्रेज थे जो यहां दफनाये गये, कोई नहीं जानता।

पहले के नाम संस्कृतिनिष्ठ :

मैंने कहा- पहले के नाम बड़े संस्कृतिनिष्ठ थे। धापू नाम भारतीय जीवन परिवेश का विराट चेतन रूप है। सभी धपे हुए, तृप्त रहें, कोई भूखा न रहे, इसीलिए अन्नपूर्णा देवी का वंदन है। उसके साथ धाम शब्द की ओपमा उसे सवाया निखार देनेवाली है। मेरी मां का नाम डेलूबाई था। यदि मैं अपने निवास का नामकरण करूं तो वह होगा 'डेलू डेरा'। हमारे यहां अस्थायी निवास के रूप में डेरे का प्रयोग होता रहा है। बरात जाती है तब बरातियों के ठहराने की जगह डेरा कहलाती है। विदाई के बाद बहू डेरे पहुंचाई जाती है। कठपुतली के खेल में भी जहां बादशाह का दरबार लगता है वहां चोपदार पहरे पर खड़ा रहता है। डुगडुगीवाला उसे आकर सावचेत करता है। कहता है, नत्थेखां पहरे पर हुसियार रहना, राजा नवाब आवें तो उनके डेरे लगवाना।

बालकवि बात को और वजनदार बनाते हैं। कहते हैं, लोकगीत जला तो डेरे के कारण ही लोकप्रिय है। मैं बोला, प्रगाढ़ प्रेमी के रूप में राजस्थान में जला बड़ा प्रसिद्ध है। जलाल युद्ध में जा रहा था तब उसकी फौज का डेरा शहर के बाहर लगवाया गया। उस समय उसकी प्रेमिका बूवना उससे मिलने और उसका डेरा देखने गई थी। तभी गीत चल पड़ा-

जलाजी मारु म्हैं तो थांरा डेरा निरखण आई हो जला
मिरगानैणी रा जला म्हैं तो थांरा डेरा निरखण आई हो जला।

इसे सुन बैरागीजी पुरानी स्मृतियों में खोगये। कहने लगे, सन् 1954-55 में ख्यातलब्ध लोक कलाकार देवीलाल सामर मेरे घर मनासा आये थे तब उनके साथ भवाई नर्तक दयाराम और लोकगीत गायिका नारायणीदेवी थी। उसका कंठ बड़ा मधुर था। पहली बार उसी से मैंने जला गीत सुना था। सुनकर मैं रोमांचित हो उठा। उस गीत को सुन मेरे सम्मुख जला बूवना और वह डेरा नजरबंद होगया। मैंने कहा, सामरजी के बाद दयाराम भी चला गया मगर नारायणीबाई के गले में आज भी वही टीस, पीड़ और हिचकोला है।

बैरागीजी ने घड़ी पर नजर घुमाई। हम तत्काल उठे। उनके साथ डॉ. पूरन सहगल और डॉ. सुरेन्द्र शक्तावत थे। टेक्सी में हम तीनों पिछली सीट पर। बालकवि आगे। बैरागीजी ने डॉ. शैलेन्द्रजी से कानाबाती की, नीमच से हमने प्रस्थान कर दिया है। तीन बजे तक उज्जैन पहुंच जायेंगे। मैं, डॉ. पूरन, डॉ. महेन्द्र भाई और डॉ. सुरेंद्र; इन तीन-तीन डाक्टरों के साथ हूं। इनके साथ मौज तथा मजे ही मजे हैं। आप निश्चिंत रहें, मिलते हैं।

लिखने को भूमिका, करने को लोकार्पण :

मैंने बात छेड़दी, इन दिनों क्या लिख रहे हैं? बैरागीजी बोले, अब लिखने को किताबों की भूमिका और करने को उनका लोकार्पण। इस उम्र में लोग इसी काम के योग्य समझने लग गये हैं। पहले तो उन पोथियों को पढ़ो। बहुत सी तो पढ़ने जैसी भी नहीं होतीं फिर उन पर लिखो प्रशंसामूलक, ठकुर सुहाता। जो काम अब तक नहीं किया, अनचाहे भी उसे करना पड़ रहा है।

डॉ. पूरन बोले, मेरे पास एक सज्जन रद्दी कागजों का बंडल लाये। वे दोहा छंद में रचना करते थे। दो घंटे तक सुनाते रहे। अंत में बोले, आप इन्हें देखलें, शुद्ध करलें, शुद्ध लिख भी दें। छह सौ के करीब तो ये हैं पर सतसई हो जाय तो मेरा भी कल्याण हो जाय। भूमिका भी आपको ही लिखनी है और लोकार्पण भी आपही के हाथों करवाना चाहूंगा।

बैरागीजी ने फुलझड़ी छोड़ी, शुक्रिया मानो कि उन्होंने लोकार्पण की व्यवस्था आपके जिम्मे नहीं डाली। मेरे पास तो एक भाई ने लोकार्पण के नाम पर चंदा कराने का साहसपूर्ण प्रस्ताव भी रख दया। वे चाहते थे कि उन्हें कहीं से पुरस्कार भी मिल जाय। यों आजकल सम्मान और पुरस्कार देनेवाले भी बहुत बढ़ गये हैं। देखा जाय तो पुरस्कार रूपी महासागर के हर किनारे पर मछुहारों के मेले लगे पड़े हैं। सबके अपने-अपने जाल हैं और सबकी अपनी-अपनी मछलियां भी हैं।

मेरे से रहा नहीं गया, बोला, एक समारोह में जिस मंच पर रचनाकार को पुरस्कृत किया गया, कुछ देर बाद उसी मंच के पीछे उससे वह चैक ले लिया गया। रचनाकार हक्काबक्का रह गया। वह क्या करता! किससे कहता! कौन उसकी सुनता!

डॉ. शक्तावत ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, यह तो कुछ नहीं हुआ। इससे भी बड़ी घटना एक समारोह में मैंने देखी जब एक वयोवृद्ध लेखक का सम्मान किया गया। समारोह में सम्मानकर्ता ने अपनी संस्था की उपलब्धि बताते हुए आर्थिक तंगी का बार-बार जिक्र किया तब सम्मानित लेखक ने न केवल वह चैक ही वापस कर दिया अपितु उस संस्था को ग्यारह हजार की राशि भी अपनी ओर से देने की घोषणा करदी।

तीन कचौरियां, दो समोसे का नाश्ता :

इन सब बातों ने हमारे मन का उत्साह ठंडा कर दिया। हम सब चुप हो गए। लगा कि जैसे यात्रा की कोई उमंग हममें नहीं बची है। कुछ चलने के बाद चुप्पी तोड़ते हुए बैरागीजी ने अपने मित्र को मोबाईल किया, ठीक पन्द्रह मिनट बाद मैं रतलाम तुम्हारे दफ्तर में पहुंचूंगा। हम कुल पांच प्राणी हैं। तीन तो डाक्टर ही हैं मेरे साथ, धुरंधर विद्वान। हम नाश्ता वहीं करेंगे। तुम तीन कचौरियां, दो समोसे, कुछ केले, एप्पल और चाय कॉफी जैसी तुम्हारी मर्जी, तैयार रखना। दस मिनट रूकेंगे और फिर उज्जैन के लिए निकल जायेंगे।

हम ठीक साढ़ा बारह बजे पहुंच गये। नाश्ता किया और फटाफट निकल चले। अपने अतीत के बोदेपन को छिपाकर वर्तमान पर इठलानेवाले मैंने कई व्यक्ति देखे किंतु बैरागीजी ने कभी अपने व्यतीत को नहीं भूला। मैं बोला, इस उम्र में तो अतीत की यादें ही बड़ी सुखद लगती हैं। मेरा बचपन कभी सुखद नहीं रहा। अभावों की जिंदगी जीते हुए जो संघर्ष किया, वही परिवेश आज भी रूढ़ बना हुआ है। आज की तरह पहले दिखावटी संस्कृति नहीं थी। अच्छा कभी भोगा नहीं किंतु पास पड़ोस का भी नहीं देखा इसलिए कभी कोई हीन भाव नहीं आया।

-शेष पृष्ठ सात पर

अड्डे अड़ंगेबाजी के

-रामदयाल मेहरा-

गांव में जिस प्रकार चौपालबाजी का महत्व है उसी प्रकार साहित्य में अड़ंगेबाजी का महत्व रहा है। इलाहाबाद, दिल्ली, भोपाल, जयपुर आदि तमाम बड़े शहरों में साहित्यिक अड़ंगेबाजी के कॉफी हाऊस, पान की दुकान, चाय की थड़ी जैसे स्थान रहे हैं। विभिन्न लेखकों ने कई रूपों में अपने संस्मरणों द्वारा बड़ी रसज्ञता के साथ उनका उल्लेख किया है। अड़ंगेबाजी के इन अड्डों पर साहित्य, कला और संस्कृति से जुड़ी कई अनमोल कृतियों का बीजारोपण हुआ। साहित्यिक आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। वैचारिक मतभेदों के जुड़ावों के श्रीगणेश कई संस्था-संगठनों की कुंडलियां बनीं तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से कई ज्वलंत सवालों, मुद्दों को सुपथ मिला। जयपुर एम.आई. रोड़ कॉफी हाऊस, जवाहर कला केन्द्र और पिंकसिटी प्रेस क्लब की अड्डेबाजी देखने का सुयोग मुझे भी मिला है। सच में उन बैठकों में, अग्रज लेखकों के सान्निध्य में मैंने जो कुछ सीखा, पाया लगा जैसे खजाना ही मिल गया है।

उदयपुर में चेटक सर्कल स्थित डॉ. महेन्द्र भानावतजी का मंगल मुद्रण साहित्यिक अड़ंगेबाजी-अड्डेबाजी का बहुचर्चित स्थान बना। विगत चार दशाब्दियों में यहां कई ख्यात-लब्ध साहित्यिक विभूतियों, संस्कृतिविज्ञों तथा स्थापित लोककला-कलाचेताओं ने अपनी उपस्थिति देकर इस स्थान की रौनक बनाये रखी। यहीं डॉ. प्रभाकर माचवे, डॉ. धर्मवीर भारती, जैनेन्द्रजी, कन्हैयालाल सेठिया, रामनारायण अग्रवाल, बालकवि बैरागी, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, वेद व्यास, कमर मेवाड़ी का सान्निध्य रहा।

स्थानीय साहित्यकारों में नंद चतुर्वेदी, डॉ. प्रकाश आतुर, डॉ. आलमशाह खान, डॉ. पूनम दईया, डॉ. सुधा गुप्ता, डॉ. शलभ, देवकर्णसिंह राठौड़, डॉ. देवराज उपाध्याय, डॉ. कमल किशोर, राजेन्द्र सक्सेना, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. विश्वंभर व्यास, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', स्वरूप व्यास, मंगल सक्सेना, ओंकारश्री जैसे साहित्यविज्ञों का प्राय: आना-जाना बना रहा। कभी बलवंतसिंह मेहता, कभी जनार्दनराय नागर कभी देवीलाल सामर तो कभी दयाशंकर श्रोत्रिय ने भी मंगल मुद्रण में अपनी बैठकें दी हैं। यह स्थान कइयों का मिलन-स्थल भी रहा जहां सब एकत्रित होकर कभी किसी कवि सम्मेलन में, कभी किसी समारोह में तो कभी किसी विशेष प्रयोजन से होने वाली बैठकों में भाग लेने के लिए निकलते। यहीं कई आंदोलनों की रूपरेखा बनी है। गलनत संदर्भों के विरोध के फरमान भी जारी हुए हैं। मित्रों के साथ हुए अन्याय के लिए हक की लड़ाई लड़ने का, धरना देने का, विरोधी स्वर बुलंदगी का बीड़ा भी उठाया है। यहीं से डॉ. भानावत ने 'पीछोला' नामक पाक्षिक पत्र का शुभारंभ किया। विगत दो दशक से मंगल मुद्रण ने 'पार्श्वकल्ला' नाम से अपनी नई पहचान कायम कर रखी है। अब वहां मुद्रण कार्य नहीं होता लेकिन डॉ. भानावत की बैठक वहीं जुड़ती है। अब डॉ. भानावतजी के सुपुत्र डॉ. तुक्तकजी ने मीडिया मेनेजमेंट का कार्य उसी भावभूमि से संभाल रखा है और 'पीछोला' की बजाय 'शब्द रंजन' नामक पाक्षिक पत्र प्रारंभ कर रखा है।

ऐसी ही एक बैठक अस्थल मंदिर के चौराहे के पास की दुकान हितैषी पुस्तक भंडार के वहां नियमित लगती जिसमें डॉ. मोतीलाल मेनारिया, पं. जनार्दनराय नागर, भवानी शंकर तथा नाथूदान महियारिया होते। ऐसा ही स्थल हिरण मगरी क्षेत्र, सेक्टर 4 के सुरेश चाय वाले के वहां है जहां साहित्यिक बंधु नियमित रूप में मिलते हैं। इनमें खुर्शीद नवाब, डॉ. ज्योतिपुंज, जगदीश तिवारी, श्रीदत्त शुक्ला, मनमोहन मधुकर, इकबाल हुसैन 'इकबाल', खुर्शीद शेख, जगदीश तिवारी और मैं साहित्य के साथ-साथ घर-परिवार से जुड़ी सभी तरह की बातों में भागीदारी निभाते हैं। उदयपुर प्रवास के दौरान डॉ. कुंदन माली भी यहां अवश्य आते हैं। जयपुर, जोधपुर, कोटा से आने वाले साहित्यिक मित्र भी इस थड़ी की चाय के साथ हमारी गपशप में उपस्थित होते हैं। ऋषभदेव से उपेन्द्र 'अणु' भी हमारी याददाश्त में शरीक होते हैं। सलीम खां फरीद, दिनेश सिन्दल, मुकुट मणिराज, हितेश व्यास, बनजकुमार 'बनज', रत्नकुमार सांभरिया, कृपाशंकर अचूक आदि अनेक मित्र भी यदाकदा हमारी बैठक से रू-ब-रू हुए लगते हैं। अब मोबाइल युग में लगता है ऐसी साहित्यिक गोष्ठियों की आवश्यकता नहीं रही। अब सबकुछ घर बैठे मोबाइल से प्राप्त करने की सुविधा हो गई है। वाट्सअप ग्रुपों के माध्यम से गंभीर चर्चाएं भी होने लग गई हैं।

ओला पार्टनर्स लीग (ओपीएल) शुरू

उदयपुर। भारत के प्रमुख ट्रांसपोर्टेशन मोबाइल ऐप ओला ने अपने ड्राईवर पार्टनर्स के लिए एक अनूठी वर्चुअल क्रिकेट खेल प्रतियोगिता ओला पार्टनर्स लीग लांच की घोषणा की। ओला के सीओओ विशाल कॉल ने कहा कि चार सप्ताह चलने वाली इस प्रतियोगिता में ड्राईवर पार्टनर सरल कार्यों को अंजाम देकर रन जीत पायेंगे और कारें, टीवी, लैपटॉप और अपने बच्चों के लिए प्रमुख क्रिकेट अकादमियों में स्कालरशिप जैसे इनाम जीत पायेंगे। ओपीएल में बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद और पुणे के सभी ड्राईवर पार्टनर हिस्सा ले सकेंगे और यह 20 मई तक लाइव रहेगी। भारतीय आलराउंडर क्रिकेटर इरफ़ान पठान और टेलीविजन हस्ती मंदिरा बेदी को इसका ब्रांड एम्बेसडर बनाया गया है जो चीयर करेंगे और ओपीएल को ड्राईवर पार्टनरों में ओपीएल को प्रमोट करेंगे। ओपीएल के ज़रिये, हम अपने साझीदारों को एक मौका दे रहे हैं कि वे अपना प्रिय खेल वर्चुअली खेलें और आकर्षक पुरस्कार जीतें।

पोथीखाना

आनन्द लोक की ओर

आजकल बहुत सारी पुस्तकें ऐसी प्रकाशित होने लग गई हैं जिनके सर्वाधिकार लेखक-प्रकाशक के अधीन होकर पुस्तक के किसी भी अंश का उपयोग करने से पूर्व लेखक अथवा प्रकाशक की स्वीकृति अनिवार्य हो गई है। इस झंझट के रहते अच्छी और उपयोगी पुस्तक भी यूं की यूं धरी रह जाती है। यहां यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि पुस्तकें छपती क्यों हैं? उनके लेखन का उद्देश्य क्या है? ऐसी स्थिति में अच्छी पुस्तक पुरस्कृत भी क्यों की जाती है? एक ओर लेखक-प्रकाशक इस बात का रोना रोते हैं कि पुस्तकों के पाठक कम होते जा रहे हैं और उनकी बिक्री भी मुश्किल हो गई है।

प्रस्तुत पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को आनन्द देने, सुखी बनाने और अध्यात्म की राह दिखाने के लिए लिखी गई है। आनन्द और अध्यात्म की जितनी विवेचनाएं विद्वानों ने, संतों ने, साधुओं ने, महापुरुषों ने और विचारकों ने की हैं और आगे भी की जायेंगी मगर तब भी सृष्टि का वह रूप नहीं बन पायेगा जिसकी अपेक्षा की जाती है और उसमें रहने वाला मानव तो कई दृष्टियों से अमानवीय ही बना हुआ है।

अपने आत्मकथ्य का प्रारंभ ही लेखक प्रमोद प्रवण ने इस स्वीकारोक्ति से किया है। वे लिखते हैं- 'आत्मानुसंधान के आकलन में आधुनिक मानव अर्थ प्राप्ति की अंधी आपाधापी में अति व्यस्त है फिर भी यथार्थ अंतस का संत्रस्त है। मन तनावग्रस्त है। अन्त:करण अभावग्रस्त है। स्वयं की सम्यक् दृष्टि में मानव आधा-अधूरा है। अपूर्ण, अकेला, अशांत है। आंखों में अवसाद, हृदय सूनेपन से आहत, मन पर भूतकाल का बोझ, आत्म-आंगन में अंधेरा असंतोष, आक्रोश है। आत्मा आनंदित नहीं, अकेलापन कचोटता है। समाज में सराहनीय स्थान नहीं है। उसके पास मात्र माया-मोह, भोग-भटकाव है।' (पृष्ठ 25)

इधर भूमिका में प्रसिद्ध विचारक प्रो. महावीर सरन जैन लिख रहे हैं- 'मैंने बहुत से तथाकथित साधकों को निकट से देखा, जाना, पहचाना है। उनका आचरण कपट भरा होता है। करनी-कथनी का द्वैत इतना अधिक होता है कि उनका जीवन अपवित्र, विकारी एवं विकृत कोटि का बन जाता है। वे अध्यात्म, दर्शन, धर्म, योग, साधना जैसे पवित्र, पावन एवं विशुद्ध चेतना के पर्यायों को अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कलंकित करते हैं। उनके पास वाक् चातुर्य का भंडार होता है जिसके बल पर वे अपने अंध भक्तों को प्रभावान्वित करते रहते हैं।' (पृष्ठ 23)

इन दोनों संदर्भों को पढ़कर तो लगता है कि ऐसा शायद ही शब्द अथवा वाक् औषध हो जो मनुष्य को खरा, सच्चा और अच्छा बना सके। यों सारे शास्त्र, धर्मग्रंथ विचारकों के उपदेशों से ही अटे पड़े हैं लेकिन इस पुस्तक के लिए प्रो. महावीर सरन जैन आश्वस्त हैं कि इसके पठन से मनुष्य आनंद लोक के माध्यम से अध्यात्म को प्राप्त कर पूर्ण मनुष्य बन सकेगा। उन्हें प्रसन्नता है कि प्रमोदकुमार सिंह 'प्रणव' की रचना-कृतियों का मूल स्वर प्रभावोत्पादक से अधिक प्रबोधोत्पादक है। उनकी पुस्तकें प्रबोधक हैं। उनकी रचनाएं उद्बोधक हैं।

यह पुस्तक तीन भागों में संयोजित है। 'प्रवण प्रार्थनाएं' में कुछ तो प्रार्थना, उसकी महिमा, ईश्वर, ध्यान, कर्म, अनुकंपा आदि पर लघु टिप्पण हैं और इनसे अधिक विविध विषयक कविताएं हैं। दूसरा भाग 'पुरुषार्थ' का है जिसमें दो भागों में क्रमश: 245 तथा 205 सुखी सार्थक जीवन के साधना सिद्ध सूत्र दिये गये हैं। इनके अलावा प्रभु दर्शन, नारी शक्ति, देने-जीने की कला, आत्ममंथन करो, कांच की बरनी, मृत्यु जैसे विषयों पर लेखक के अपने विचार-उद्बोधन हैं। तीसरा खण्ड 'प्रसाद' नाम से है जिसमें लेखक की प्रकाशित कृतियों पर प्रतिक्रियाएं, संदेश, शुभाशंसाएं हैं। पृष्ठ 261 से लेकर 320 तक के पन्ने लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रसन्नता-प्रसंशा लिए हैं। इसके आगे के पृष्ठ 321 से 336 प्रसाद परिदृश्य-पुरस्कार विमोचन-अभिनंदन से संदर्भित चित्र मय झांकियों का दरसाव लिए हैं। महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इतनी बड़ी सजिल्द और साफ सुथरी छपाई लिए पुस्तक का मूल्य मात्र 299 रूपये है ताकि आम पाठक बिना बोझ के इस पुस्तक को खरीद सके और अच्छा इंसान बनने के इस बोधगम्य खजाने से समृद्ध हो आनंद लोक में विचरण करते हुए अध्यात्मगामी बन सके। **-भात**

ताखा-अम्बाव की भारत गाथा

किसी विशिष्ट व्यक्तित्व की पद्यबद्ध गायकी को गाथा कहा गया है। इसमें गायक अपनी मण्डली के साथ गाता है और वादक वाद्य बजाता है। नवरात्रा में मेवाड़ प्रदेश में देवी देवताओं के सम्मुख रात-रात भर जागरण कर जो विशिष्ट गायन पद्धति प्रचलित है वह 'भारत' नाम से जानी जाती है। ढाक वाद्य की संगति से यह गाथा ढाक भारत के रूप में भी प्रचलित है।

सन् 1971 में डॉ. महेन्द्र भानावत ने मेवाड़ के कुछ गांवों की यात्रा कर वहां के देवरों में लगभग 25 भारत गाथाओं का रेकार्डिंग किया था। इनमें से प्रस्तुत दो भारत ताखा और अम्बाव नाम से प्रकाशित कर ताखा-अम्बाव रो भारत नाम से पुस्तक का प्रकाशन भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से किया था।

प्रस्तुत पुस्तक उसका द्वितीय संस्करण है जिसका प्रकाशन राजस्थान शिक्षा विज्ञान एवं संस्कृति विकास परिषद्, उदयपुर ने किया। परिषद् के संचालक नंदराम माली ने ठीक ही लिखा कि ऐसे साहित्य के समग्र संकलन, अध्ययन एवं प्रकाशन के लिए बड़े धैर्य और अध्यवसाय की आवश्यकता है।

डॉ. भानावत ने ताखा तथा अम्बाव से सम्बंधित भारत गाथा के मूल पाठ सहित उसका हिन्दी अनुवाद भी दिया है जिससे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। ताखा से तात्पर्य तक्षराज से है। इसकी गाथा आदिवासी भीलों द्वारा प्रदर्शित गवरी नामक नृत्यानुष्ठान में भी मिलती है। यह गाथा बड़ी ही दिलचस्प है जिसमें ताखा का राजा प्रथु से मिलन होता है। ताखा प्रथु को गोगा से मिलाने तेरहवें पाताल ले जाता है।

भारत के अन्त में कहा गया है कि कलियुग में ताखा सर्वप्रथम धरती पर खेमाणा गांव में प्रतिष्ठित किये गये। विषैले जन्तुओं के काटे व्यक्ति तुम्हारे पास आकर स्वस्थ होंगे। महाराणा सज्जनसिंहजी ने भी तुम्हारा चमत्कार देखा। हेरा गांव में रानी की चोटी और बादशाह की मूछें काटकर जनजीवन का उपकार किया। सनवाड़ में बांक्यादेव कहलाये। अन्यत्र खोड़ादेव, खाकलदेव नाम से जाने गये। मेवाड़ में जगह-जगह ताखाजी की धाम है।

देवी अम्बाव का उदयपुर में अम्बापोल दरवाजे के पास प्रसिद्ध मंदिर महाराणा राजसिंह द्वारा संवत् 1721 ईस्वी में बनाया गया। यहां आकर माताजी के स्नान-जल से लोगों की नेत्र-पीड़ा दूर होती है। देवी निपूतों को पूत देती है। यहां की नथ ले जाकर बालकों को पहनाई जाती है और नाथू नाम रखा जाता है। विवाह पर तोरण वांदते समय सासू द्वारा दूल्हे को नाथ्या नारक्या के नाम से बैल का बछड़ा दिये जाने की प्रथा रही है।

तीस पृष्ठीय यह पुस्तक आकर्षक कवर लिए है जिसकी कीमत 75 रूपया है।

चित्तौड़ का वैभव और मेवाड़ के महत्वपूर्ण स्थल

चित्तौड़ का वैभव एवं मेवाड़ के महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णन नामक पुस्तक उदयपुर की राजस्थान शिक्षा विज्ञान एवं संस्कृति विकास परिषद् से प्रकाशित होकर श्री अरविन्दसिंहजी मेवाड़ को भेंट की गई है। इसमें चित्तौड़ के साथ-साथ मेवाड़ के सुप्रसिद्ध स्थान ढेबर झील जयसमन्द, मांडलगढ़, सज्जनगढ़, घसार जहां श्रीनाथजी की चित्र-सेवा होती है, राजसमन्द, कुंभलगढ़, माछला मगरा, जावर माता, एकलिंगजी, उदयसागर, चावण्ड, ऋषभदेवजी, गोगुन्दा, अम्बामाता मन्दिर, पीछोला, आदि से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी सुलभ कराई गई है। यह जानकारी ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ी मूल्यवान है। इसके लेखक एसडी हाड़ीरानी डायरेक्टर नंदराम पंवार तथा वाचक एडवोकेट अम्बालाल भावसार हैं। **- डॉ. कहानी भानावत**

लव, सेक्स एण्ड मेरीज अमोंग ट्राइबल्स

अधिक मूल्य की किताबें अधिक हाथों का स्पर्श नहीं पातीं और न अधिकाधिक आंखें ही उन्हें देख पाती हैं। पुस्तकालयों की शोभा ही तभी है जब वहां रखीं पुस्तकें कई हाथों में हेरी-फेरी जाती रहें।

डॉ. नरेन्द्र एन. व्यास आदिवासी जीवन एवं संस्कृति के जानेमाने लेखक हैं। राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित ट्राइबल रिचर्स इन्स्टीट्यूट के वे तीन दशक तक डायरेक्टर रहे जहां से उन्होंने ट्राइब नामक शोधपत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन किया। उन्होंने वहां रहते कई अखिल भारतीय संगोष्ठियों, समारोहों, कार्यशालाओं एवं प्रदर्शनियों का आयोजन कर पूरे देश में आदिम जातियों के शोध-संरक्षण की ओर ध्यान आकृष्ट किया। स्वयं अपने संस्थान में आदिवासी संग्रहालय की स्थापना की। विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रकाशित आदिवासी जीवनधर्मिता से सम्बद्ध प्रकाशकों में डॉ. व्यास का महत्वपूर्ण योगदान रहा और इस विषय की 40 पुस्तकें दीं।

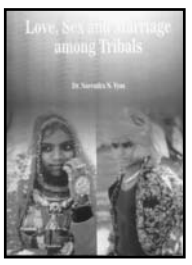

प्रस्तुत पुस्तक 'लव, सेक्स एण्ड मेरीज अमोंग ट्राइबल्स' हिमांशु पब्लिकेशंस, उदयपुर से हाल ही में प्रकाशित 108 पृष्ठ लिए 495 रूपये मूल्य की है। अधिक मूल्य की किताबें अधिक हाथों का स्पर्श नहीं पातीं और न अधिकाधिक आंखें ही उन्हें देख पाती हैं। पुस्तकालयों की शोभा ही तभी है जब वहां रखीं पुस्तकें कई हाथों में हेरी-फेरी जाती रहें।

पुस्तक छह अध्यायों में विभक्त है। भील तथा गरासियों की सामाजिकता के संदर्भ, भीलों में विवाह, गरासियों में यौन और विवाह, पुरातन जातियों में यौन और विवाह, अफ्रीकन आदिवासियों में विवाह तथा यौनजनित जीवन नामक अध्यायों में लेखक ने अपने दीर्घकालीन पर्यवेक्षण एवं अनुभवों का सटीक विवेचन कर अंतिम अध्याय बियोंड लव मेकींग (प्रेमाचार से आगे) में उपर्युक्त अध्यायों का सार-संहार प्रस्तुत किया है। पुस्तक निश्चत रूप में उपयोगी और संदर्भकारी है जिसका सब ओर स्वागत होगा। **-म.भा.**

बिग बाजार में 'पब्लिक होलिडे सेल'

उदयपुर। बिग बाजार में 3 मई तक 'पब्लिक होलिडे सेल' का आयोजन किया जा रहा है। सेल में विभिन्न श्रेणियों की व्यापक श्रृंखला पर आकर्षक पेशकश, मेगा डील्स और छूट प्रदान की जा रही है। बिग बाजार के सीईओ सदाशिव नायक ने कहा कि ग्राहकों की बचत को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने के अपने प्रयास में बिग बाजार सार्वजनिक छुट्टी सेल मेगा डील्स एवं पेशकश का उत्सव मना रहा है। सेल में कोरयो एलईडी टीवी औऱ कोरयो एसी पर 5000 रुपये और खान-पान एवं निजी इस्तेमाल के उत्पादों पर 20 प्रतिशत की छूट दी जा रही। सेल में इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर घरेलू फैशन, पुरुषों के लिए फुटवीयर से लेकर पोशाक तक, महिलाओं और बच्चों तक के लिए विभिन्न श्रेणियों में आकर्षक पेशकश होंगी। सेल में ग्राहक 4000 रुपये की खरीदारी पर अपने फ्यूचर पे वॉलेट में 1000 रुपये के कैशबैक का भी लाभ ले सकते हैं। एसबीआई कार्ड धारक को 5 प्रतिशत की अतिरिक्त छूट भी मिलेगी।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 मई 2017

सम्पादकीय

उदयपुर स्थापना दिवस

उदयपुर की जिस ढंग से बसावट और बस्तियों के नाम हैं वे बड़े अजूबे और कई तरह की जानकारी लिए हैं। इससे यहां के व्यक्तियों और उनसे जुड़े कारोबार का पता चलता है वहीं इस शहर की संरचनापरक भौगोलिक स्थितियों, राजकाज की गतिविधियों, कार्य करने वाले मनसबदारों तथा विविध शिल्प उद्योगों का भी अध्ययन किया जा सकता है। जो स्थल किसी समय अपनी सामान्य पहचान लिये थे वे कालान्तर में विस्तार पाकर पूरी बस्ती ही उस नाम की संज्ञक हो गई।

आज का उदयपुर अपने पुरातन वैभव के साथ नया जीवन लिए है। जिन नामों से यहां की बसावट, बस्तियों तथा बसेरे हैं उनमें टिम्बा, घाटी, वाड़ा, घाट, वाड़ी, गली, चौहट्टा, चौक, वाबड़ी, नाल, मगरी, कांटा, महल, हवेली, ओप, पोल, हाटा, खुर्रा, मण्डी, तलाई, रेत, सेरी, खाई जैसे नाम उल्लेखनीय हैं।

इन नामों के विविध स्थलों का अध्ययन अपनेआप में उदयपुर के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा लोकपरक दस्तावेजीकरण का उम्दा सबब बनता है। उदयपुर की स्थापना संवत् 1610 की अक्षय तृतीया को हुई। महाराणा उदयसिंह द्वारा स्थापित इस शहर का नामकरण भी उन्हीं के नाम से किया गया। यह सब लिखित लेखन का दस्तावेज है किन्तु लोकसम्मत पक्ष इससे भी पहले का काल पकड़ता है। जो भी हो, यहां कुछ बस्तियों की राह चलती जानकारी प्रस्तुत है। इससे इस शहर के बांकेपन को ठीक से जानने का आधार बनता है।

सिलावटवाड़ी : सिल से तात्पर्य पत्थर से है। इस क्षेत्र में केवल पत्थर काम करने वाले कारीगर रहते थे जो पत्थर पर नाना प्रकार की कलाकारी करते थे। भवन निर्माण के साथ घुटाई, आरास पोतने, झींकी पीसने का कार्य भी करते थे।

मुल्लातलाई : पूर्व में यहां तलाई थी जहां मल्लयुद्ध के एदी पहलवान रहते थे। महाराणा द्वारा इनका पालन पोषण होता था। विशिष्ट अवसरों पर इनका मल्लयुद्ध होता था। मल्लयुद्ध वालों की तलाई आज मुल्लातलाई नाम से जानी जाती है।

कसारों की ओल : पीतल के बर्तन एवं पानी के बेवड़े बनाने वाले कसारा कहलाते हैं। इनकी बस्ती ओल के रूप में जानी गई। घंटाघर से जगदीश मार्ग के एक ओर की गली में यह बसावट है।

महावतवाड़ी : महाराणा के हाथियों की देखभाल करने वाले महावत कहलाते हैं। ये जहां बसे हुए थे वह क्षेत्र महावतवाड़ी के नाम से जाना गया। यह आबादी मोती चोहट्टा और चांदपोल के बीच में ऊंची पहाड़ी पर बसी हुई है।

झीणीरेत : यह क्षेत्र पूर्व में बारीक रेत के लिए प्रसिद्ध था। यह कार्य तेली जाति के लोगों के जिम्मे था जो मकान निर्माण के लिए रेत बेचते थे।

अमल का कांटा : खेतों में उपज के तौर पर तैयार अफीम मेवाड़ घराने की तरफ से जिस स्थल पर कांटे पर तोलकर, कीमत तय होने पर बिक्री हेतु जारी की जाती थी, उसी स्थल का नाम अमल का कांटा पड़ गया। सूरजपोल से जुड़ा यह क्षेत्र गुलाबबाग के पास है। इसी क्षेत्र में राजघराने से जुड़ी नाचगान वाली तवाइफें रहती थीं।

पुरोहितजी का खुर्रा : चढ़ाई पर पत्थरों से जो मार्ग तैयार किया जाता वह चढ़ाई वाला मार्ग खुर्रा कहलाता है।

मेहता का टिम्बा : टिम्बा से तात्पर्य ऊंचे स्थल से है। छोटी मगरी पर महाराणा द्वारा मेहता जाति के परिवार बसाये गये। मेहता ओसवाल जाति के वे लोग थे जो महाराणा के राजकाज के प्रमुख थे।

जार की कार्यकारिणी घोषित

-अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने विपिन गांधी को बनाया महासचिव-

उदयपुर। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने नव निर्वाचित आगामी दो वर्षीय कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। कार्यकारिणी में महासचिव विपिन गांधी, उपाध्यक्ष ललित पारीख एवं अजयकुमार आचार्य, कोषाध्यक्ष अल्पेश लोढ़ा, संगठन सचिव मंगीलाल जैन, प्रचार सचिव भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, कार्यकारिणी सदस्य भूपेश दाधीच, राजेन्द्र हिलोरिया, विकास बोकड़िया, राजेन्द्रकुमार पालीवाल, विकास जैन को मनोनीत किया है। संरक्षक जगदीश विजयवर्गीय और पवन खाब्या जबकि सलाहकार सुमित गोयल, शैलेष व्यास, संजय खाब्या, डॉ. रवि शर्मा एवं कपिल श्रीमाली होंगे।

70 साल से साइकलिंग पर फेयर एण्ड फिट्

उदयपुर के तेजसिंह नागौरी पिछले 70 वर्षों से साइकिल सवार बने हुए हैं। उन्हें गर्व है कि इसके कारण वे हर दृष्टि से सुखी हैं। पैसे की बचत का अन्दाजा जैसा लगाना चाहें, लगा लें मगर स्वास्थ्य की दूष्टि से वे पूर्णत: फेयर एण्ड लवली तो नहीं कहते हैं पर फिट् कहकर ठहाका लगा देते हैं।

वे कहते हैं, साइकिल सध गई तो सब सध गये। एके साधे सब सधे कहावत खाली कहने की नहीं है। उन्होंने इसकी साधना की है। सब लोग हवा में उड़ रहे हैं और होड़ाहोड़ी चल रही है। घर में जितने लोग, उतने दुपहिया, चौपहिया वाहन। पहले चौपहिया की जगह चौपाया पाले जाते थे। गाय, बैल, घोड़ा, गधा, बकरी, ऊंट पालन आय के जरिये थे। आज के चौपहिया खर्च ही खर्च कराते हैं।

इस दृष्टि से साइकिल बिचारी सीधीसादी सवारी है। कोई खर्च नहीं। कोई विशेष जगह भी इसके लिए नहीं चाहिये। यह लाठी की तरह सहारे का भी काम करती है। सामान ढोने के काम आती है और पूरे परिवार को सफर कराई जा सकती है। खाने को किसी प्रकार का दाना-पानी भी इसे नहीं चाहिए।

प्रश्नों के उत्तर में तेजसिंहजी ने बताया कि मुझे कभी इससे हीनग्रंथी का शिकार नहीं होना पड़ा। सब घरों में क्या, घर-घर में स्कूटर आने पर भी मेरे मन में तुलनात्मक दृष्टि से छोटे होने का भाव नहीं रहा बल्कि प्रसन्नता यह रही कि पैसा व्यर्थ खर्च नहीं हो रहा है।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में पिताजी ने पहली बार साइकिल दिलाई तब मात्र दो सौ रूपये की थी। जैसी तब वह मजबूत थी, आज छह, आठ, दस हजार खर्च करने पर भी केवल एक हाथ से ऊंचाई जा सकती है। पिताजी का कहा अब भी याद है कि ठीक से साइकिल चला लेगा तो गृहस्थ का गाड़ा भी बड़ी बहादुरी से चला लेगा। यों बहादुरसिंह उनका नाम भी था।

मुझे अब भी याद है पहली बार फतह स्कूल में पढ़ने गया तब पिताजी ने तिलक निकाला और माताजी ने चम्मच में दही खिलाकर मंगल शकुन दिये थे। साइकिल से एकबार मैंने जयसमंद तक की यात्रा की। इस पर चलने से सभी तरह की कसरत-व्यायाम हो जाता है। हाथ, पांव, शरीर के मुंड-रूंड तथा पांचों इन्द्रियों की सजगता, मांसलता तथा चपलता बनी रहती है। घाटी के चढ़ाव में जहां पूरा शरीर उर्ध्वगामी रहता है वहीं उतार में हवाई यात्रा जनित सुख की प्राप्ति का एहसास होता है। पांवों से पेडल छोड़ विविध तरह की कियाएं करते यात्रा का उन्मुक्त आनंद लीजिए। मन चाहे जहां रूकिये। विश्राम करिये।

प्रकृति से मेलजोल करना हो तो साइकिल से निकलिये। हवा जैसे हमारे साथ चल रही है। नदी जैसे हमारे साथ नहाने को उछाल खा रही है। पहाड़ जैसे ऊपर आने का हेला दे रहे हैं। जंगल जैसे मंगलानंद पाने की मनुहार देकर रोक रहे हैं। राहगीर जाते-आते राम-राम कहते यात्रा को सहज सरल बनाने की दस्तक दे रहे हैं।

शहर में भी अब पैदल चलना दूभर हो गया है मगर साइकिल अभी भी बनी हुई है। जहां रूकना हो, तत्काल साइकिल से उतर जाइये। जहां चलना हो, फटाके से ऊपर टांग मार चलते बनिये। प्रदूषण से कोसों दूर रास्ते में जो भी मिले उससे बतियाने, रामासामा करने, हालचाल पूछने में साइकिल ही शोभा बनी हुई है। अन्य कोई सवारी नहीं। इसकी कोई होड़ नहीं। कोई कम्पीटीशन नहीं। कोई जोड़ नहीं।

-डॉ. तुक्तक भानावत

शिकार में महाराणा के साथ

मैं जब तीन वर्ष का था तब ही महाराणाश्री फतहसिंहजी ने मुझे अपने साथ रख लिया। मेरा खाना-पीना महलों में ही होता। महाराणा साहब जब कभी घूमने पधारते तो मुझे चाबुक सवार के सामने बिठाया जाता। बग्घी, मोटर में या फिर शिकार के दौरान भी मैं सदा साथ रहता। हाथी पर किसी के साथ बैठकर मैं सब देखा करता। इस कारण बहुत जल्दी ही मैं होशियार हो गया।

एक घटना शिकार से जुड़ी याद है। चित्तौड़ में केम्प था। सेठावा की मगरी पर शेर की शिकार हेतु श्रीमान का पधारना हुआ। मुझे झाला चमनसिंहजी के साथ हाथी पर बिठाया गया। झाला साहब सधे हुए बड़े प्रवीण शिकारी थे। मगरी के शिकारगाह के पास ही तालाब था जहां जानवर पनाह लेते। यहीं झाड़ियों में एक शेर के घुसने की खबर थी।

चमनसिंहजी का हाथी बहुत भारी और चमकने वाला नहीं था। हमारे साथ फौजदार था जो काफी होशियार था। उसका पिता गुलाबखां भी पहुंचा हुआ निशानेबाज था। चमनसिंहजी ने देखा कि मेरी पगड़ी पर रूमाल बंधा हुआ नहीं है अत: मुझे बन्दूक थमाकर वे रूमाल

बांधने लगे। इतने में अन्य हाथियों के साथ चल रहे बरुओं के हल्लेगुल्ले से दो-तीन सांभर भड़ककर हमारे पास से निकले। इस अफरातफरी में हमारे साथ चल रहे हाथियों में चमक बैठ गई।

वे भड़के जिस कारण आई हड़बड़ाहट से मेरे हाथ की बन्दूक नीचे गिर पड़ी। उसके गिरते ही जोर की आवाज आई जिससे उसका कुन्दा टूटकर अलग हो गया। बन्दूक गिरते देख चमनसिंहजी गुस्से में आ गये और मेरे दो थप्पड़ मारते बोले- यह क्या किया?

बन्दूक की आवाज महाराणा साहब ने भी सुनी। फरमाया कि बन्दूक किसने चलाई? हाथी पर बैठे शिकारी बोले- 'राम! राम!! हुकम, ईश्वर ने बचाया नहीं तो बड़ा अनर्थ हो जाता। कोई बुरी तरह मारा जाता।' शिकारियों में मेरे पिताजी भी थे। जब उन्हें पता चला तो महावत से गुस्से में बोले- 'हाथी पास में ले चल, अभी उसकी खबर लेता हूं।'

इस बीच दरबार का वहां पधारना हो गया। चमनसिंहजी से सब बात पूछी। मैं नीचा मुंह किये जोर-जोर से सुबकियां ले रहा था। मुझे देख श्रीमान ने फरमाया-'यह डरता है। कभी नीचे गिर पड़ेगा। इसको होदे में बांधा करो। तुमने इस बच्चे को बन्दूक क्यों दी? अगर रूमाल बांधना था तो बन्दूक तुम अपनी गोद में रख लेते या महावत को दे देते।'

उसी समय रस्सा मंगवाकर मुझे कमर से बांधा गया और शिकार के वक्त मुझे हर समय कमर से बांधने का हुकम हुआ। मैं कुछ समय तक ऐसा ही बंधता रहा फिर उस बंधन से छुटकारा पाकर मैं दूसरे शिकारियों के साथ कर दिया गया। चमनसिंहजी से जब भी मेरी भेंट होती, वे इस शिकार की याद अवश्य दिलाते और कहते- 'तुमने मेरी बन्दूक तो तोड़ी सो तोड़ी, ऊपर से श्रीमानों की डांट-फटकार भी दिलाई।' **-नंदराम माली**

खोज-खबर

कुण्डा पंथ

हमारे देश में प्रचलित धार्मिक-आध्यात्मिक पंथों में कांचलिया अथवा कुंडापंथ एक ऐसा विचित्र, अद्‌भुत और अनूठा पंथ है जिसकी समता किसी दूसरे पंथ से नहीं की जा सकती। इसे बीसनामी पंथ के नाम से भी जाना जाता है। लोकपुरूष रामदेवजी इसके मूल उपजीव्य रहे हैं।

अकेला पुरूष और अकेली महिला कुंडा पंथ के सदस्य नहीं हो सकते। पति-पत्नी सम्मिलित रूप से इसके सदस्य बनते हैं। इसका अपना एक गुरु होता है। जब कभी इसकी संगत बिठानी होती है, गुरु के आदेश पर कोटवाल द्वारा सदस्यों को सूचना पहुंचवादी जाती है। रात्रि को लगभग दस बजे सभी लोग निश्चित स्थान पर एकत्र होते हैं। यह स्थान किसी सदस्य विशेष का घर अथवा कोई एकान्त स्थान होता है। आयोजक सदस्य की ओर से इस संगत का समस्त खर्च वहन किया जाता है। वही सभी सदस्यों के लिए चूरमा-बाटी के भोजन की सामग्री जुटाता है। सदस्य लोग ही यह भोजन तैयार करते हैं और सामूहिक रूप से धूपध्यान कर भोजन करते हैं।

कलाकार दयाराम ने 12 फरवरी 1976 को बताया कि मुख्य स्थल पर, जहां इसका आयोजन किया जाता है, पाट पूरा जाता है। इसके लिए सवा हाथ के करीब कपड़ा जमीन पर बिछा दिया जाता है। यह कपड़ा सफेद होता है। इसके ऊपर लाल कपड़ा बिछाया जाता है। इसके चारों किनारों पर पंचमेवा-खारक, बादाम, दाख, पिश्ता तथा मिश्री रख दिया जाता है। कपड़े के बीच में चावल का सातिया, ऊपर एक तरफ चांद, दूसरी तरफ सूरज, दोनों के बीच रामदेवजी का घोड़ा, नीचे बीच में रामदेवजी के पगल्ये तथा दोनों ओर पांच-पांच टोपे मांडे जाते हैं। सातिये पर कलश थापित कर दिया जाता है। इस कलश पर जोत कर दी जाती है। पाट पूजने की इस क्रिया में सवा सेर चावल लिये जाते हैं। इसी पाट के पास कवेलू में चूरमे-खोपरे की धूप लगा दी जाती है।

लगभग दो बजे तक भजनभाव होते रहते हैं। भजन समाप्ति के बाद गुरु के निर्देशानुसार सभी औरतें अपनी-अपनी कांचलियां खोलकर कोटवाल को देती हैं। कोटवाल इन कांचलियों को कलश के पास रखे हुए मिट्‌टी के कुंडे में डाल देता है।

पाट पर रखे हुए चावलों में से गुरु मन में धारे व्यक्ति को, कुंडे में पड़ी हुई कांचलियों में से एक कांचली निकालने पर जिस औरत की कांचली हाथ में आ जाती है उसके साथ यौन-क्रीड़ा के लिए निर्देश देता है। दोनों स्त्री-पुरूष कलश के पास डाले गये पर्दे के पीछे जाकर यौन-क्रीड़ा करते हैं। यौन-क्रीड़ा स्वरूप वीर्य को स्त्री अपने हाथ में लेकर आती है और गुरु के वहां रखे पात्र में डाल देती है।

इस प्रकार बारी-बारी से गुरु सादके धारता रहता है और कांचली उठा-उठाकर स्त्री-पुरूष को यौन-क्रीड़ा के लिए आज्ञा प्रदान करता रहता है। गुरु द्वारा धारे पांच की संख्या वाले सादके (आखे) 'मोती' कहलाते हैं। पांच से कम-ज्यादा की संख्या वाले सादके 'जोड़' कहलाते हैं। सादकों की यह संख्या आने पर पुन: अन्य व्यक्ति के लिए सादके धारे जाते हैं। पांच सादकों में यदि कोई कचरा या आधा सादका आ जाता है तो उसे 'आल्या' कहकर पुन: पाट पर रख दिया जाता है।

जब सबकी बारी पूरी हो जाती है तो जितना भी वीर्य एकत्र होता है उसमें मिश्री मिला दी जाती है और सभी सदस्यों को प्रसाद के रूप में वितरित कर दिया जाता है। मिश्री-मिश्रित वीर्य का यह प्रसाद 'वाणी' कहलाता है। कोटवाल द्वारा प्रसाद देने की यह क्रिया 'वाणी फेरना' कहलाती है। वाणी के अतिरिक्त चूरमे का भी प्रसाद होता है जो 'कोली' कहलाता है। पंच मेवे का प्रसाद 'भाव' नाम से जाना जाता है। प्रसाद देते समय लेने वाले और देने वाले के बीच सवाल-जवाब के रूप में जो कड़ावे बोले जाते हैं वे इस प्रकार हैं-

हुकम? हड़ूमान को।
आग्या? ईश्वर की।
दुवो? चारी जुग में हुवो।
चोकी? हिंगलाज की।
परमाण? संत चढ़ै निरवाण।
थेगो? अलख रा घर देखो।

इस समय लगभग प्रात: हो जाती है तब सब लोग अपने-अपने घर की राह लेते हैं। यौन-क्रीड़ा की ऐसी मर्यादित स्वच्छता-स्वच्छंदता एक और रूप में भी इन बीसानामी पंथियों में देखने को मिलती है।

इसी तरह की एक प्रथा मध्यप्रदेश में प्रचलित है। यहां जनवरी 1976 में दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली में 'सामूहिक यौन-क्रीड़ा चोली पूजन' शीर्षक से छपी एक खबर दी जा रही है। 'चोली पूजन' का आयोजन सूर्यास्त के बाद किया जाता है। आयोजक सभी साधकों को नियत स्थान पर आमंत्रित करता है। किसी नए या संदिग्ध समझे जाने वाले व्यक्ति को उस स्थान पर आमंत्रित नहीं किया जाता है।

पूजन में नये व्यक्ति का समावेश किसी पुराने साधक की सिफारिश से ही होता है लेकिन उसके लिए पूजन में अपनी पत्नी को भी शामिल करना अनिवार्य होता है।

उल्लेखनीय है कि ये सभी तंत्र साधक विवाहित होते हैं और उनकी पत्नियों को भी पूजन में भाग लेना पड़ता है। पूजा स्थल का पता केवल साधकों को ही मालूम होता है।

साधकगण सर्वप्रथम पूजा स्थल की निरापद स्थिति से संतुष्ट कोहर माता देवी की मूर्ति के समक्ष प्रार्थना करते हैं। तब प्रधान पुजारी एक बड़े पात्र में शराब भरकर पात्र-पूजन करता है।

पूजन में शामिल सभी महिलाओं को पात्र में अपनी-अपनी चोली उतार कर डालनी होती है। चोली को शराब में भिगोकर प्रत्येक महिला अपने वक्ष साफ करती है। पूजन-प्रार्थना के दौरान बीच-बीच में पुरूष साधक घड़े के चारों ओर नाचते हुए शराब पीते हैं और अन्य जनों को पिलाते हैं।

प्रधान पुजारी देवी की मूर्ति की पूजा कर उसे नई चोली पहनाता है। इसी अवसर पर मेमने की बलि दी जाती है। मांस पकने तक शराब का दौर चलता रहता है। तत्पश्चात देवी को भोग लगाकर सभी साधक प्रसाद ग्रहण करते हैं।

प्रसाद के बाद प्रत्येक पुरूष उस शराब के पात्र से एक-एक चोली उठाता है और जिस महिला की चोली उसके हाथ लग जाये उसके पास जा खड़ा होता है। सभी चोलियों का बंटवारा हो जाने पर नर-नारी देवी की मूर्ति के समक्ष सामूहिक रूप से यौन-क्रीड़ा में लिप्त हो जाते हैं। सामूहिक समागम समाप्त होने पर देवी का एक आभार सूचक पूजन और होता है। **-म.भा.**

प्रो. सारंगदेवोत कर्नल की मानद उपाधि से विभूषित

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत को सेनाएयर कमांडर कोमोडार राधा कृष्णनन शंकर तथा कर्नल ग्रूप कमांडर कर्नल जे.एस. सिंह द्वारा कर्नल की मानद उपाधि प्रदान की गई। इस अवसर पर प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि जीवन में आगे बढ़ना है तो भीड़ में अपनी अलग पहचान बनानी होगी। विद्यार्थी अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उसी दिशा में प्रयास करें। उन्होंने कहा कि मेरी बचपन से ही सेना में जाने की ललक थी, और स्कूली पढ़ाई से ही वे एनसीसी के केडेट्‌स रहे और आज उनका कर्नल की उपाधि पाकर सपना पूरा हुआ। उन्होंने युवाओं का आव्हान किया कि वे अपने अंदर देशभक्ति का भाव जगायें। बड़े सपने देखें एवं उन्हें साकार करें।

राजन द्वारा 12 हजार की पुस्तकें भेंट

आकोला। विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर स्थानीय साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' ने छात्र-छात्राओं में पठन पाठन की रूचि विकसित करने और उनमें सृजनात्मकता बढ़ाने के उद्देश्य से 12 हजार रूपये मूल्य की बालसाहित्य की विभिन्न विषयों पर आधारित 280 पुस्तकें निशुल्क भेंट की।

राजन का मानना है कि बालसाहित्य ही संस्कार साहित्य हैं। निशुल्क पुस्तकें भेंट करने पर विद्यालय परिवार ने राजन जी का आभार व्यक्त किया। ज्ञातव्य है कि राजकुमार जैन राजन पिछले कई वर्षों से विद्यार्थियों, विद्यालयों, संस्थाओं तथा शोधार्थियों को निशुल्क बाल साहित्य भेंट करने का कार्य कर रहे हैं और अब तक वे लगभग साढ़े तीन लाख रूपये से भी अधिक राशि की पुस्तकें देश के विभिन्न राज्यों में भेंट कर चुके हैं।

पहाड़ पर पर्यटक होटल

-डॉ. रमेश 'मयंक'-

चले आए हैं अभियंता, ठेकेदार
मजदूर-मालिक पहाड़ पर बनाने
एक और पर्यटक होटल।
वे देर रात तक
पहाड़ को निहारते रहे थे
और
पहाड़ भी उनको ताकता रहा
आंखों में झांकता रहा।
ये लोग
पर्यटक आवास के नाम पर
होटल बनायेंगे
पैसा कमाने की फैक्ट्री लगायेंगे
शालीनता-मर्यादाओं को
एक तरफ सरकाते हुए
फैशन परस्त हो जायेंगे
पाश्चात्य हवाओं से
कहां तक बच पायेंगे?
लेकिन-
देश-दर्शन की ठौड़ देह-प्रदर्शन
क्लब-डांस-कल्चर-पार्टी का दौर चला
पहाड़ का अन्तस हो गया खोखला।
अचानक-
बस यूं ही चलते-चलते
जब ब्रेक लग जाता है
ब्रेकिंग न्यूज बनकर
सुर्खियों में आता है
तब गड़बड़जाला
थोड़ा-थोड़ा समझ में आता है।
फिर भी मनुष्य स्वार्थ में अंधा
कहां सबक सीख पाता है
पहाड़ पर एक और
पर्यटक होटल की योजनाओं का क्रम
थम नहीं पाता है।

'ऊंची उड़ान' कार्यक्रम की शुरूआत

उदयपुर। वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान जिंक ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के तहत आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के मेधावी छात्र-छात्राओं को उत्कृष्ट कोचिंग प्रदान कराने के लिए 'ऊंची उड़ान' कार्यक्रम की शुरूआत की है।

जिंक की हेड-सीएसआर नीलिमा खेतान ने बताया कि ग्रामीण बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा सम्बल एवं ऊंची उड़ान जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इसके तहत आर्थिक रूप से असक्षम ३० मेधावी छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है। चयनित विद्यार्थियों को आई.आई.टी. एवं अन्य प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश के लिए उत्कृष्ट कोचिंग प्रदान कराया जाएगा। जिंक शिक्षा सम्बल कार्यक्रम के तहत कक्षा 9 से 12 तक की परीक्षा की तैयारी कर रहे बच्चों के लिए विशेष कक्षाओं का प्रावधान एवं आयोजन करता रहा है। इससे गत वर्षों में 55 स्कूलों के लगभग 6000 बच्चे लाभान्वित हो चुके हैं।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि मैं इन ग्रामीण बच्चों की प्रतिभा से प्रभावित हूं। जिंक शिक्षा से वंचित बच्चों के विकास के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। मुख्य प्रचालन अधिकारी पंकज कुमार ने ग्रामीण बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि आई.आई.टी. में अध्ययन के लिए कड़ी मेहनत एवं लगन के साथ-साथ जुनून होना चाहिए। पंतनगर से आये सुमित ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देने के लिए जिंक को धन्यवाद दिया। जिंक के हेड-कॉर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि कोचिंग के माध्यम से कमजोर परिवारों के मेघावी छात्र-छात्राओं को देश की आई.आई.टी. एवं प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश का अवसर मिलेगा तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वयं एवं परिवार का भविष्य उज्जवल करेंगे।

जिंक 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' से सम्मानित

उदयपुर। वेदान्ता समूह की जस्ता-सीसा एवं चांदी उत्पादक कंपनी

हिन्दुस्तान जिंक को 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' के लिए सम्मानित किया गया हैं। हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन ने बताया कि जिंक ने 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' सर्वे में भाग लिया था जहां मानव संसाधन की कार्यविधियों एवं संस्कृति के ऑडिट के आधार पर जिंक को 'कार्य करने के लिए उत्तम स्थान' पाया गया है। 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' प्रक्रिया में परिणाम, दृष्टिकोण, विकास निर्धारण और समीक्षा पर आधारित डेटा आदान-प्रदान शामिल है। इसके लिए ऑनसाइट आंकलन में विभागीय प्रमुख, अनुबंध कर्मचारियों की संख्या, संघ और सदस्यों का साक्षात्कार भी शामिल होते हैं।

जिंक को इस मान्यता के लिए तीन स्तम्भ जिम्मेदारी से कार्य, बिल्डिंग सुदृढ़ रिलेशनशिप, एडिंग एण्ड शेयरिंग वेल्यू समर्थित रहे हैं। जिंक में संविदा कर्मचारियों सहित 17000 कर्मचारी कार्यरत हैं जिसमें 14 प्रतिशत महिला कर्मचारी हैं। यह मान्यता कंपनी में एक सकारात्मक कार्य वातावरण बनाने के लिए अपने कर्मचारियों और कंपनी के निरंतर प्रयास को सशक्त बनाने की दिशा में हिंदुस्तान जिंक का पुख्ता प्रमाण है।

फोटोग्राफी प्रतियोगिता में 4 लाख तक के पुरस्कार जीतने का मौका

उदयपुर। राजस्थान फोरम द्वारा फोटोग्राफी की अनोखी प्रतियोगिता 'मेरी आँखों से राजस्थान' आयोजित की जा रही है जिसमें भाग लेने वाले प्रतियोगी 4 लाख रूपये तक के पुरस्कार जीत सकते हैं।

राजस्थान फोरम के सदस्य संदीप भूतोड़िया ने बताया कि श्री सीमेंट के सहयोग से आयोजित की जा रही इस प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रतिभागी को राजस्थान के किसी भी क्षेत्र की खूबसूरती को दर्शाते हुये फोटोग्राफ्स को क्लिक कर अपनी श्रेष्ठ फोटोग्राफ्स को राजस्थान फोरम की वेबसाइट पर अपलोड करना होगा। इन प्रविष्ठियों के आधार पर निर्णायक मंडल द्वारा विजेताओं की घोषणा की जायेगी। प्रतियोगिता के अंतर्गत 1 लाख रूपये का एक प्रथम पुरस्कार, 50-50 हजार रूपये के दो द्वितीय पुरस्कार, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले 4 प्रतिभागियों को 25 हजार रूपये तथा चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाले दस प्रतिभागियों को 10 हजार रूपये, पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे। प्रतियोगिता की निर्णायक समिति में फोटोग्राफर और ज्वैलर सुधीर कासलीवाल, राजनेता व सामाजिक कार्यकर्ता बीना काक, पूर्व पर्यटनमंत्री ऊषा पूनिया तथा गायिका ईला अरूण शामिल हैं।

अशोक लेलैंड द्वारा टेक्नॉलॉजी का प्रदर्शन

उदयपुर। हिंदुजा समूह की प्रमुख कंपनी एवं भारत की दूसरी सबसे बड़ी कमर्शियल वाहन निर्माता अशोक लेलैंड ने चेन्नई में ग्लोबल कॉन्फ्रेंस, 2017 में इंटेलिजेंट इग्जॉस्ट गैस रिसर्कुलेशन (आईईजीआर) टेक्नॉलॉजी पर आधारित अपने भविष्योन्मुख उत्पादों तथा उद्योग में अग्रणी सर्विसेस की पूरी श्रृंखला का प्रदर्शन किया। आईईजीआर टेक्नॉलॉजी के प्रयोग एवं घरेलू विकास में अग्रणी, अशोक लेलैंड एकमात्र ओईएम होगी, जिसने 130 हॉर्सपॉवर से अधिक की श्रेणी में अपने उत्पादों के लिए सफलतापूर्वक इस टेक्नॉलॉजी का क्रियान्वयन किया है।

इंटेलिजेंट इग्जॉस्ट रिसर्कुलेशन (आईईजीआर) टेक्नॉलॉजी बीएस4 नियमों का पालन करने के लिए अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने का एक सहज लेकिन रचनात्मक समाधान है। यह टेक्नॉलॉजी न केवल सलेक्टिव कैटालिटिक रिडक्शन (एससीआर) टेक्नॉलॉजी (यूरोपियन टेक्नॉलॉजी पर आधारित) की तुलना में भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप है, बल्कि यह काफी किफायती, संचालन में आसान और रखरखाव में बहुत सुगम भी होगी। इसलिए यह अशोक लेलैंड के ग्राहकों को फायदा पहुंचाएगी और एससीआर टेक्नॉलॉजी पर आधारित उत्पादों की तुलना में ओईएम को बेहतर मार्जिन भी प्रदान करेगी। आईईजीआर टेक्नॉलॉजी को केंद्र में रखकर कंपनी ने तीस से ज्यादा रचनात्मक उत्पाद एवं सेवाएं प्रदर्शित किए, जिनमें ट्रक, बस, लाईट कमर्शियल वाहन (एलसीवी), साईमुलेटर्स, क्विक सर्विस बाईक्स तथा जेनसेट्स शामिल हैं।

मैनेजिंग डायरेक्टर विनोद के. दासरी ने कहा कि अशोक लेलैंड ने बीते वर्षों में कई रचनात्मक तथा श्रेणी की सर्वश्रेष्ठ पहल की हैं। हमारी उत्पाद श्रृंखला में आईईजीआर टेक्नॉलॉजी का यह प्रदर्शन टेक्नॉलॉजी पर आधारित भविष्योन्मुख उत्पादों को पेश करने की हमारी क्षमता का प्रमाण है। इसके अलावा घरेलू टेक्नॉलॉजी हमारे ब्रांड के वायदे 'आपकी जीत, हमारी जीत' को चरितार्थ करने में हमारी मदद करेगी। कंपनी ने हाल ही के सालों में ग्राहकों की व्यापक संख्या को सेवाएं देने के लिए अपने नेटवर्क का तेजी से विस्तार किया है।

इसके 1000 टच-प्वाईंट्स हैं तथा असली स्पेयर पार्ट्स ब्रांड, लेपार्ट्स के लिए अतिरिक्त 5000 आउटलेट्स हैं। सभी प्रमुख हाईवे पर हर 75 किमी. में एक सर्विस सेंटर के साथ अषोक लेलैंड ग्राहकों तक 4 घंटों के अंदर पहुंचने और 48 घंटों के अंदर वाहन को वापस सड़क पर दौड़ाने के अपने तत्काल वायदे को पूरा करता है।

नेस्ले इंडिया द्वारा हेल्दी किड्स प्रोग्राम लॉन्च

उदयपुर। नेस्ले इंडिया ने मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से नेस्ले हेल्दी किड्स प्रोग्राम लॉन्च किया है । इसका लक्ष्य पोषण, स्वास्थ्य और चुस्त जीवनशैली के बारे में जागरुकता फैलाकर बच्चों को सेहतमंद जीवन के लिए प्रोत्साहित करना है।

नेस्ले इंडिया के कॉर्पोरेट अफेयर्स के सीनियर वाईस प्रेसिडेंट संजय खजूरिया ने कहा कि इस प्रोग्राम का लक्ष्य खासकर लड़कियों में सेहतमंद आहार, चुस्त जीवनशैली तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के बारे में जागरुकता बढ़ाना है। विद्यार्थियों के साथ इस प्रोग्राम में कार्यशाला के माध्यम से माता-पिता के साथ बातचीत तथा उन्हें अपने घरों में सेहतमंद आदतों के विकास के लिए प्रेरित करना शामिल है। मैजिक बस के साथ नेस्ले की पार्टनरशिप वर्ष 2014 में प्रारंभ हुई और इसके माध्यम से आज तक 1,30,000 बच्चों को मदद दी जा चुकी है। वर्षभर इस प्रोग्राम के तहत हर विद्यार्थी पोषण एवं सेहतमंद और चुस्त जीवनशैली के बारे में जानता है। मैजिक बस के साथ बचपन से लेकर आजीविका के तरीकों और विशेष इंटरेक्टिव सत्रों के द्वारा बच्चों को पोषक एवं सेहतमंद जिंदगी के लिए प्रेरित किया जाता है।

42 छात्रओं को साइकिलें वितरित

उदयपुर। बेटी देश का भविष्य और परिवार का आधार है। बेटी को शिक्षा एवं सुरक्षा प्रदान करना हमारा परम दायित्व है,बेटी शिक्षित होने से दो

परिवार शिक्षित होते हैं। ये विचार महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेन्सी में आयोजित साइकिल वितरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। इस अवसर पर 42 छात्राओं को साइकिलें वितरित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा उपनिदेशक, माध्यमिक शिवजी गौड़ ने कहा कि बालिकाओं के प्रोत्साहन के लिये राज्य सरकार ने अनेक योजनाएं चला रखी हैं,जिनका भरपूर लाभ उठाते हुए छात्राओं को उच्च शिक्षा ग्रहण कर समाज में अग्रणी भूमिका निभाने की आवश्यकता हैं। विशिष्ठ अतिथि अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी वीरेन्द्र पंचोली,पार्षद शोभा मेहता,समाजसेवी अनिल पालीवाल व कमल प्रकाश बाबेल, खेलशंकर व्यास थे। स्वागत संस्था प्रधान उर्मिला त्रिवेदी तथा धन्यवाद फैमीदा बेगम ने ज्ञापित किया। संचालन रांका मेहता एवं दर्शना शर्मा ने किया।

पीआईएमएस में चमड़ी के कैंसर की सफल शल्य चिकित्सा

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज

(पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने चमड़ी के कैंसर से पीड़ित एक महिला की सफल शल्य चिकित्सा की है।

पीआईएमएस के वाइस चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि चमड़ी के कैंसर से पीड़ित शान्तिदेवी को गत दिनों पीआईएमएस में भर्ती कराया गया। चर्म रोग विशेषज्ञा डॉ. शिवांगी शर्मा ने मरीज को देखने के बाद चमड़ी का कैंसर बताया। यह महिला के चेहरे और गदर्न पर फैला हुआ था। इसके अलावा महिला मधुमेह, उच्च रक्तचाप, थाइराइड एवं उच्च वसा से भी पीड़ित थी। महिला की हालत देखते हुए डॉ. शिवांगी ने तुरन्त ऑपरेशन द्वारा शल्य चिकित्सा की। अब महिला पूरी तरह स्वस्थ है।

संतुलित आहार से मधुमेह का बेहतर प्रबंधन संभव : डॉ. चोर्डिया

उदयपुर। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा हार्मोनल डिसीज-कारण एवं उपचार विषय पर संगोष्ठी का आयोजन होटल ड्रीम पैलेस में किया गया।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ. जय चोर्डिया ने अंत:स्त्रावी ग्रंथियों की कार्यप्रणाली एवं उससे शरीर पर होने वाले प्रभावों की विस्तृत जानकारी दी और बताया कि मां को गर्भावस्था से ही थाइराइड एवं अन्य हार्मोन्स की जांच करवाते रहना चाहिये जिससे कि नवजात शिशु में होने वाली विभिन्न शारीरिक अनियमितता यथा विकलांगता, मंदबुद्धि जैसी समस्याओं से बचा जा सके। माता-पिता की जानकारी एवं चिकित्सक के उचित मार्गदर्शन से बड़ी आसानी से बच्चों को इन असाध्य रोगों से बचाया जा सकता है। डॉ. चोर्डिया ने मधुमेह के बारे में कहा कि इस रोग में व्यक्ति को खाद्य पदार्थों एवं उनके द्वारा शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव का सही अनुमान लगाये जाने की आवश्यकता है न कि किसी पदार्थ को पूर्णत: छोड़ने की जरूरत है। पदार्थ की उचित मात्रा व सही समय का निर्धारण जरूरी है। संतुलित आहार, व्यायाम व नियमित दिनचर्या से मधुमेह का बेहतर प्रबंधन संभव है।

कार्यक्रम में टीपीएफ अध्यक्ष निर्मल धाकड़ ने अतिथियों का स्वागत किया और फोरम द्वारा किये गये विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. आर.एस. नैनावटी ने टीपीएफ का परिचय दिया। अतिथि का सम्मान बी.पी. जैन, निर्मल कुणावत एवं चन्द्रेश बापना ने किया। संचालन मुकेश बोहरा ने किया।

हार्ले-डेविडसन इंडिया का बूट कैंप आयोजित

उदयपुर। आरामदायक राइडिंग को बढ़ावा देने के लिए हार्ले-डेविडसन

इंडिया ने नए राइडरों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 22 और 23 अप्रैल को उदयपुर में हार्ले-डेविडसन बूट कैंप का आयोजन किया। हार्ले-डेविडसन बूट कैंप में ब्रांड के प्रशंसकों के लिए बेहद मजेदार तरीके से मोटरसाइकिल के बेसिक्स दर्शाए गए, जिससे उन्हें हार्ले-डेविडसन मोटरसाइकिल पर अपनी निजी स्वतंत्रता को चुनने की दिशा में पहला कदम उठाने में मदद मिले।

ड्यून्स हार्ले-डेविडसन डीलरशिप के डीलर प्रिंसिपल सुखिंदर सिंह हुड्डा ने कहा कि उदयपुर में आयोजित हार्ले-डेविडसन बूट कैंप को मिली लोगों की प्रतिक्रिया देखकर हम बहुत खुश हैं। एक इंटरेक्टिव प्लेटफॉर्म के तौर पर बूट कैंप राइडिंग के प्रशंसकों को ब्रांड तक सीधा गेटवे उपलब्ध कराया। कैंप में हार्ले-डेविडसन लाइफस्टाइल और संस्कृति का परिचय, इसका उद्भव, इतिहास और मोटरसाइकिल परिवार के बारे में समझाया गया, जिससे उन्हें अपने लिए सही मोटरसाइकिल का चुनाव करने में मदद मिले। हार्ले-डेविडसन के प्रशंसकों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित किया गया, जिससे उन्हें राइडिंग भाईचारे का अनुभव हो। राइडरों को उनके सपनों की मोटरसाइकिल पर बैठकर शॉर्ट राइड लेने का भी अवसर मिला। इसके अतिरिक्त राइडरों को कस्टमाइज्ड फाइनैंस सॉल्यूशंस के बारे में भी जानकारी दी गई, जिसे विशेष तौर पर हार्ले-डेविडसन खरीदने का इच्छा रखने वाले लोगों के लिए तैयार किया गया है।

बोहरा यूथ मेडिकल ट्रस्ट द्वारा आयोजित फैशन फन्तासिया में सीपीएस की पांचवीं की छात्रा तन्या स्वामी।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

भारत की पहली एनिमेटेड इन्वेस्टिगेटिव सीरिज- 'गट्टू बट्टू' का प्रीमियर 1 मई को

उदयपुर। बच्चों के लिए भारत की पहली इन्वेस्टिगेटिव सीरिज 'गट्टू-बट्टू' को निकलओडियन लेकर आया है। 'गट्टू-बट्टू' 1 मई से हर सोमवार से शुक्रवार शाम 7 बजे निकलओडियन पर बच्चों के दिलों में उतरकर उनका मनोरंजन करेगा।

निकलओडियन की चौथी मेड इन इंडिया सीरिज के बारे में हेड-प्रोग्रामिंग, किड्स एंटरटेनमेंट, वायकॉम 18 के अनु सिक्का ने कहा कि निकलओडियन पर हम हमेशा इनोवेशन की सीमाओं का विस्तार कर ऐसे शो लॉन्च करते हैं, जो अपनी श्रेणी में प्रथम हों। मोटू पतलू, पकड़म पकड़ाई, शिवा और अब गट्टू बट्टू, ये सभी शो अद्वितीय हैं, जो हमारे युवा दर्शकों की मनोरंजन की जरूरतों को पूरा करते हैं। बच्चों को रहस्य और एडवेंचर पसंद होता है और गट्टू बट्टू पहेलियां सुलझाने और कॉमेडी की अपनी हाई डोज़ के साथ बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय होंगे।

गट्टू बट्टू आधुनिक समय की सीरीज़ है, जिसका केंद्र भारत पर है। गट्टू बट्टू दो सर्वश्रेष्ठ मित्रों की कहानी है, जो विश्रामपुर नामक छोटे से शहर में एक जासूसी एवं सुरक्षा एजेंसी के मालिक हैं। जहां हर केस सुलझाने में बट्टू अपने दिमाग का प्रयोग करता है, वहीं बट्टू साहसी और सही होता है। उनका विनोदी और बुद्धिमान कवर-अप इस शो का निर्माण करते हैं।

गट्टू और बट्टू की रोचक खोज में उनका नासमझ एवं प्यारा दोस्त टिंग टांग उनके साथ शामिल रहता है, जिसे मार्शल आर्ट आती है। डॉ. भटावडेकर एवं उसके गैजेट्स के साथ मिलकर वो एक कुख्यात मजेदार विलेन शेर सिंह से लड़ने निकलते हैं।

हाउस ऑफ निकलओडियन की ओर से यह अद्वितीय इन्वेस्टिगेटिव देश में विकसित एनिमेटेड शो, एक्शन एवं कॉमेडी का श्रेष्ठ मिश्रण है और बच्चों के लिए मनोरंजक अनुभव प्रदान करने का वायदा करता है। लॉन्च के लिए तैयार गट्टू-बट्टू देश को संतरे रंग में रंग देंगे और रास्ते में युवा दर्शकों को अपना दोस्त बनायेंगे।

पेंशन व पालनहार योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार हो : जैन

उदयपुर। जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अशोक जैन ने कहा कि सामाजिक पेंशन योजना तथा पालनहार जैसी योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक संख्या में पात्र लोगों तक इनका लाभ पहुंच सके। श्री जैन संभागीय आयुक्त कार्यालय में जिला कलक्टर रोहित गुप्ता की उपस्थिति में टीएसपी एरिया के जिलों के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग तथा आरएसएलडीसी के अधिकारियों की बैठक में बोल रहे थे।

श्री जैन ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से समाज के विभिन्न उपेक्षित तबकों के लिए योजनाएं चलाई जा रही हैं लेकिन उचित जानकारी के अभाव में सभी पात्र लोगों तक उनका लाभ नहीं पहुंच पा रहा है खासकर सामाजिक पेंशन तथा पालनहार योजना के पात्र लोग काफी कम इसका फायदा ले पा रहे हैं। उन्होने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे आमजन के बीच योजनाओ की जानकारी पहुंचाने के समुचित प्रयास करें ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति लाभ से वंचित न रहे। उन्होंने उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ एवं सिरोही जिलों के अधिकारियों से विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। संबंधित अधिकारियों ने अपने जिले में अंतर्जातीय विवाह, विधवा पुत्री विवाह, पालनहार, दिव्यांग पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन जैसी योजनाओं में अब तक हुए खर्च एवं लाभान्वितों की संख्या के बारे में जानकारी प्रदान की।

लाभार्थियों के खाते में पेंशन ट्रांसफर करने के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि मनीआर्डर से भुगतान की संख्या में क्रमबद्ध कमी लाएं। ई-मित्र पर पोर्टल पर पेंडिंग प्रकरणों को जल्द से जल्द निस्तारित करें। उन्होंने जनजाति इलाके में छात्रावासों में सभी सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उदय बने वोडाफोन सुपरफैन प्रतियोगिता के विजेता

उदयपुर। वीवो आईपीएल 2017 में वोडाफोन के राजस्थान के पांच भाग्यशाली उपभोक्ताओं को आईपीएल के लिए वोडाफोन सुपर फैन का खिताब जीतने का सुनहरा मौका मिला।

उदयपुर से कारपेंटर उदय सुथार ने गत दिनों ईडन्स गार्डन्स में कोलकाता नाईट राइडर्स और किंग्स इलेवन पंजाब के बीच हुए मैच को लाईव देखा। उदय ने कहा कि वोडाफोन सुपरफैन का खिताब जीतना मेरे जीवन का सबसे खास मौका था। मैं वोडाफोन के प्रति आभारी हूँ जिसने मुझे आईपीएल के इतिहास के साथ जुड़ने का मौका दिया। वोडाफोन इण्डिया में ईवीपी-मार्केटिंग सिद्धार्थ बैनर्जी ने कहा कि उदय के अलावा जयपुर निवासी आनंद पिंचा, मोहम्मद शकील, अमन जैन, और वीरू मीना को भी अपने एक दोस्त या परिवारजन के साथ हवाईजहाज से मैच स्थल तक जाने का मौका मिला। उन्हें बड़े स्टाइल से स्टेडियम तक ले जाया गया और विशेष वोडाफोन बॉक्स में बिठाया गया।

मैच के बाद विजेता कप्तान ने उनके साथ हाथ मिलाए, उन्हें ऑटोग्राफ युक्त मैच की गेंद दी। बैनर्जी ने कहा कि 10 यादगार सालों के साथ वोडाफोन और आईपीएल एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। प्रशंसकों के साथ मिलकर जश्न मनाना वोडाफोन आईपीएल की मुख्य रणनीति रही है। हर आईपीएल टूर्नामेन्ट के साथ वोडाफोन सुपर फैन प्रतियोगिता की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

मोबाइल ग्राहकों की संख्या में 56.8 लाख की वृद्धि

उदयपुर। तेजी के सिलसिले को बरकरार रखते हुए भारतीय दूरसंचार उद्योग ने मार्च के महीने में भी मोबाइल ग्राहकों की संख्या में वृद्धि दर्ज की है और मोबाइल टेलीफोन बाजार में 56.8 लाख ग्राहक जुड़े।

देश में मोबाइल ऑपरेटरों के संगठन सीओएआई द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार मोबाइल फोन ग्राहकों की संख्या मार्च 2017 के अंत तक 89.5258 करोड़ पर पहुंच गई। इसमें दिसंबर 2016 तक रिलायंस जियो इन्फोकॉम लि. के ग्राहक भी शामिल हैं। अगर आरजियो के गाहकों की संख्या को छोड़कर बात की जाए तो मार्च के अंत तक कुल मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या 82.31 करोड़ थी।

सीओएआई के महानिदेशक राजन एस मैथ्यूज ने कहा कि शीर्ष पायदान पर अपनी स्थिति बरकरार रखते हुए भारती एयरटेल ने मार्च के दौरान 30 लाख ग्राहक जोड़े जिससे उसका कुल ग्राहक आधार बढ़कर 27.365 करोड़ ग्राहक पर पहुंच गया। वोडाफोन का ग्राहक आधार 20.906 करोड़, आइडिया सेल्युलर का 19.537 करोड़ और आरजियो का 7.2158 करोड़ ग्राहक पर पहुंच गया। 33.25 प्रतिशत भागीदारी के साथ भारती एयरटेल इस उद्योग में सर्वाधिक बाजार भागीदारी वाली दूरसंचार कंपनी बनी हुई है। भारत में विभिन्न सर्किलों के मोबाइल ग्राहकों की संख्या में वृद्धि के आकलन से जुड़ी इस रिपोर्ट में कहा गया है कि यूपी ईस्ट सर्किल ने मार्च में सर्वाधिक संख्या में ग्राहक (कुल 7.51 करोड़) जोड़े। वहीं 7.063 करोड़ मोबाइल ग्राहकों के साथ महाराष्ट्र दूसरे और 7.003 करोड़ ग्राहकों के साथ बिहार तीसरे नंबर पर रहा। दूसरी तरफ, नए ग्राहकों को जोड़ने के संदर्भ में पश्चिम बंगाल और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह ने मार्च महीने में 8.6 लाख नए ग्राहकों के साथ अच्छी बढ़त दर्ज की।

दो दिन बालकवि..... **(पृष्ठ दो का शेष)**

बैरागीजी की सर्वोत्कृष्ट अच्छाई यह है कि वे अपने अतीत जीवन को सर्वथा याद करते हुए धन्य बने रहते हैं। अपने रद्दड़ समझे जाने वाले बचपन को उन्होंने कभी हीन नहीं माना और गर्वशाली ही बने रहे। ऐसा व्यक्तित्व ही रोड़ी का रतन तथा मंगते से मिनिस्टर बनता है। बालपने के रेल के खेल में वे सबसे पीछे रहते थे कारण कि पीछेवाला हमेशा अपने आगेवाले का कमीज पकड़े रहता। बालकवि के पास पहनने को कमीज नहीं होता, केवल बनियान होता। सबसे पीछे रहने का यह लाभ होता कि वे तो अपने आगेवाले की कमीज पकड़े रहते और उनके बनियान में पकड़ने जैसा कुछ नहीं होता तो वे सबसे पीछे रहकर गार्ड बाबू बन इठलाये रहते। उन्होंने सुन रखा था कि रेल में सबसे पीछे का डिब्बा गार्ड बाबू का होता है जो पूरी गाड़ी का संचालन करता है।

गरीब का स्वाभिमान हजार गुना :

गरीब आदमी का स्वाभिमान समृद्धों की तुलना में कई हजार गुना अधिक होता है। गरीब भले ही मकोड़े की तरह मसल दिया जायेगा पर कभी ओछा नहीं बनेगा। न झुकेगा, न टूटेगा और न अपना स्वाभिमान तथा सत्व ही खोयेगा।

बैरागीजी सुनाते हैं, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री ने मुझे संसदीय सचिव बनाया। राज्यपाल द्वारा शपथ ग्रहण करने के लिए कलेक्टर लेने आए। पूरे मनासा के लोग मेरे घर के बाहर जमा होगये। पिताजी बाहर बैठे मित्रों के साथ गपशप कर रहे थे। मैंने उनके चरण स्पर्श किए। आशीर्वाद स्वरूप उन्होंने कहा, जाओ बेटा राज करो। ध्यान रखना, मेरी गरीबी पर कोई उंगली नहीं उठापाये। भीख मांगने का लोठा वापस तेरे हाथ में न आ जाये तब तक कुछ बिगड़ा नहीं है और माथा चूमते बोले, वापस जल्दी आना। जोग संजोग देखिए, साढ़ा चार माह में ही हमारी सरकार गिर गई। मैं गया था झंडीवाली कार में बैठकर और लौटा रोड़वेज की बस से। लौटते ही पिताजी से कहा, आपने कहा था कि वापस जल्दी आना सो मैं आगया किंतु अठारह माह बाद ही जब पुन: कांग्रेस सत्ता में आई तब मैं मंत्री बनाया गया। मेरे पास सामान्य प्रशासन, सूचना, प्रकाशन, भाषा तथा पर्यटन विभाग थे।

डॉ. सहगल बोले, दादा का मंत्री काल का समय मध्यप्रदेश शासन के इतिहास में ही नहीं, पूरे देश में याद किया जाता रहेगा। इन्होंने सत्ता में रहते पिता के कथन को सर्वोपरि सीख मान गरीबी पर कभी उंगली नहीं उठने दी। सदैव पारदर्शी जीवन जीया। विशिष्ट रहते हुए भी जब तक ये मंत्री रहे, उनका निवास हर साधारण का घर-आंगन बना रहा। इनके समय की कोई फाईल न कभी ठंडी हुई और न किसी ने लावा ही उगला। एकबार वे विक्रम विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' से मिलने साइकिल पर गये, तब सारे देश के अखबारों में बड़ी खबर बनी।

काव्यपाठ हेतु पारिश्रमिक का चलन :

बैरागीजी ने बताया कि सुमनजी और बच्चनजी दोनों इलाहाबाद में साथ-साथ रहकर पढ़ाई करते थे तथा काव्यपाठ करने जाया करते थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम काव्यपाठ हेतु पारिश्रमिक लेने की शुरूआत की। फिर काका हाथरसी ने उनका पूर्ण समर्थन दिया। काका के साथ जो भी काव्यपाठ करता उसे वे पूरा पारिश्रमिक दिलाते।

हम लोग तीन बजते-बजते उज्जैन पहुंच गये। डॉ. शैलेन्द्र और परिकल्पा की निदेशिका डॉ. पल्लवी हमारी प्रतीक्षा में थे। एक अच्छे से होटल में हमारे ठहरने की व्यवस्था कर दी गई। एक कमरे में बैरागीजी के साथ डॉ. शक्तावत और उनक पास ही मैं और डॉ. सहगल ठहर गए। चार बजे हमारी संगोष्ठी प्रारंभ होने वाली थी अत: हम ठीक से तैयार हो कालिदास अकादमी के रघुवंशम् हॉल में पहुंच गए। वहां उपस्थित नगर के कई प्रबुद्ध व्यक्तियों से भेंट हुई। संगोष्ठी की अध्यक्षता पुरातत्ववेत्ता डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने की।

भोपाल से मेरे मित्र बसंत निरगुणे भी आगये थे। उन्होंने मालव लोककला संस्कृति पर विगत चालीस-पचास वर्षों में खूब जमकर मूल्यवान लेखन किया है। डॉ. कपिल तिवारी के साथ जुड़कर आदिवासी लोककला परिषद में रहते उन्होंने मालवा के सभी लोकांचलों के विद्वानों को जोड़ा और उनके द्वारा कई अछूते विषयों पर पुस्तकें तैयार करवाईं। मालवी की सहोदर मेवाड़ी के नाते उन्होंने मुझसे भी पाबूजी की पड़ और पांडवों का भारत नामक पुस्तकें लिखवाईं। यहीं से प्रकाशित चौमासा नामक चातुर्मासिक पत्र भारतीय लोकसाहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में मील का पत्थर बना हुआ है। सांगोष्ठी में उनकी लिखी 'सांझा फूली' पुस्तक का लोकार्पण बड़ा सामयिक तथा मालवी लोककला संरक्षण की दिशा में अभूतपूर्व रहा। निमाड़ अंचल के निवासी होने के कारण उन्होंने निमाड़ की रग-रग को लोकरंगी बना दिया। उन्होंने मुझे अपनी सद्य प्रकाशित निमाड़ी मुहावरों वाली पुस्तक भी दी जो दस हजार मुहावरों से जड़ी उनके यायावरी जीवन की उपलब्धि का खदानकोश ही कहा जाना चाहिए।

-शेष अगले अंक में

हिंदी सीखने फ्रांस से उदयपुर पहुंचा रोबोट 'नाओ'

उदयपुर। फ्रांस की राजधानी पेरिस से हिंदी सीखने के लिए पहला फ्रांसीसी ह्युमैनोइड रोबोट 'नाओ' झीलों की नगरी उदयपुर आया है। पहले से 19 भाषाएं जानने वाला 'नाओ' जब हिन्दी सीख लेगा तो दूसरे रोबोट में हिन्दी प्रोग्रैमिंग के माध्यम से दुनिया में पहुंच सकेगी।

टेक्नो इंडिया के डायरेक्टर आरएस व्यास बताया कि ह्युमनॉइड रोबोट का पांचवां संस्करण है। यह किसी भी तरह की जानकारी दे सकता है। इसकी लंबाई 58 सेंटीमीटर है। दुनिया में अब 10 हजार नाओ रोबोट बेचे जा चुके हैं। यह इंटरनेट पर गूगल सहित खास तरह की प्रोग्रामिंग के जरिए आवाज को सर्च कर एक्शन करता है और सवालों के उत्तर देता है। वाई-फाई से कनेक्ट करते ही इसके भीतर का कंप्यूटर सक्रिय हो जाता है। व्यास ने बताया कि प्रदेश में यह अपनी तरह का पहला रोबोट है, जो कलडवास के टेक्नो इंडिया एनजेआर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पहुंचा है। यहां इसे क्लाउड कंप्यूटिंग, डाटा एनेलिटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस आदि की जानकारियां दी जायेगी।

व्यास ने बताया कि 'नाओ' कार चला सकता है, अमेजन जैसी ऑनलाइन साइट से अपनी पसंद की चीजें मंगवा सकता है, गाना गा सकता है और ऑर्केस्ट्रा के साथ संगीत की धुनें रचने सहित कितने ही करतब कर सकता है। इसके अलावा मिडिल मैनेजमेंट कर सकता है। एक्सेल सीट भर देता है। कोमोडिटी/सेल्समैन/सप्लाई के काम कर देता है। प्रोडक्ट की जानकारी दे देता है। अकाउंटेंट्स डाटा प्रोसेसिंग का काम करता है। प्रोग्रामिंग के बाद यह रेसेप्शनिस्ट से सुपिंटेंडेंट जैसे काम करेगा। बातचीत के लिए इसमें 7 कृत्रिम इंद्रियां हैं। चार माइक्रोफोन और लाउडस्पीकर से बातों को समझ कर जवाब दे सकता है।

श्लोका को मिला 'बेस्ट प्रफोर्मिंग चाइल्ड आर्टिस्ट अवार्ड'

उदयपुर। पेसिफिक मेडीकल कॉलेज के चैयरमैन राहुल अग्रवाल की पुत्री डीपीएस उदयपुर की सातवीं कक्षा की छात्रा श्लोका अग्रवाल ने शौर्यगढ़ में आयोजित 'अशोका सिने अवार्ड' में जिला स्तर पर 'बेस्ट प्रफोर्मिंग चाइल्ड आर्टिस्ट अवार्ड' प्राप्त किया है। श्लोका को यह पुरस्कार प्रसिद्ध लोकगायक मामे खान, लक्षराज सिंह मेवाड़ एवं फैशन डिजाइनर प्रीति राठौड़ ने प्रदान किया। गौरतलब है कि श्लोका ने राजस्थानी फिल्म 'कंगना' में चाइल्ड आर्टिस्ट के साथ टीवी सीरियल क्राइम प्रेट्रोल में कार्य करके उदयपुर व अपने परिवार का गौरव बढ़ाया है। श्लोका के बेहतरीन प्रदर्शन पर वाइस चेयरमैन गोविन्द अग्रवाल, प्रधानाध्यापक राजेश धाबाई, उप प्रधानाचार्य संजय नरवरिया एवं समस्त शिक्षकगणों ने शुभकामनाएँ प्रदान की।

कान्यो-मान्यो

ब्याव रा राग-रंग

अणा दनां जठ देखो वठ ब्याव-शाद्यां रा रंग देखवा ने मिल्या। पैलां कंकोतरी लिखता हल्का गुलाबी कागद माथै नै वां लिख्या पर आंगल्याऊं कंकू छांटता। पछै वणी कंकोपतरी नै बीड़ वणी माथै लच्छो लपेटता नै सगासोयां नै भेजता। अबै तो कंकोतर्यां रा भांत अर वांरी छपाई देख अचम्बो वै। कई कंकोतर्यां अतरी कीमती नै सोभाऊं वै कै वणां नै जतन सूं अवेरवा रो मन करै।

ब्याव री रंगतां रौ कई कैणो। अबै घरां मांय मांडा नी मंडै। एक तो अतरी जगा नी मिलै कै सबनै ठीक ढंग सूं ठैराय वांरी सरवरां कर सकां। दूजै सगासोई कठै-कठै पोंचग्या। पयो टको वै नी वै तोई नुगतो तो करणो पड़ै। होड़ाहोड़ी अर दिखावो अतरो चालग्यो कै लापो दैय आपणो गाळ लाल राखणा पड़ै नीं तो एक मिनट मांय ब्याव री रंगत बगड़ जावै अर करी कराई चीजां रौ खाटो निकल जावै।

अबै ब्याव वाटिका मांय वै। वांरी त्यारियां दैख अन्दाज नी पोंचै। सीता माता री वाटिका री कळपना आ जावै। दरवाजा स्वागत करै। ब्याईसगा भांत-भांत रा सिणगार करै। लुगायां आपरी लछमी बतावै। गेणागांटाऊं लदीपदी रै। घाघरा भारी भरकम तुकै नी। जमीं माथै घैराता थका। ओढण पैरण री सगळी चीजां दीखै तो डील-डूंटी भी दीखै।

स्वागत द्वारे मंगल बाजा री मधुरै-मधुरै राग रंगत। कदीकदाक एक वाटिका मांय दो-दो ब्याव हुवै तो पतोई नी पड़ै कै आपणै जठै जाणो है वींरो मारग कस्यो है। जीम जीमाय नै जदी लिफाफो दैवण नै घरधणी नै ढूंढ़ां तो पतो लागै गलत जगां आयग्या तो अबै लिफाफो कीनै दां। भीड़भाड़ मांय ठा नी पड़ै। अबै केई बुलावण्या तो लिफाफोई नी राखै। कंकोतरी में छाप दै कै आपरो पधारणोई सबसूं मोटो आशीष है। कणी तरै री भेंट भेंटावण री दरकार नी है। फूलां री माला तक लावण री तकलीफ करजो मती। ठीक ही है, लाखां रीपा खरच वेइर्‌या जठै लिफाफा रौ कई मोल तोल वै। सोभा राज पधार्‌यां री है।

शाही-विवाह में चांदी के मंडप की खास सजावट

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। नेपाल के सबसे अमीर बिजनेसमैन बिनोद चौधरी के बेटे वरुण चौधरी की शादी जयपुर की अनुश्री टोंग्या के साथ हुई। पुष्कर, बनारस समेत देश के कई शहरों से आए 35 पंडितों ने मारवाड़ी अंदाज में दूल्हा-दुल्हन को सात फेरे दिलवाए। इस मौके पर श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे, अभिनेता सलमान खान, शत्रुघ्न सिन्हा, उद्योगपति बीके मोदी, गायक मिका सिंह, अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष सत्य भूषण जैन, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उनके पुत्र वैभव गहलोत सहित भारत-नेपाल के कई बिजनेसमैन शामिल हुए। शादी के लिए चांदी के मंडप को खास क्रिस्टल डेकोरेशन से सजाया गया। केटरर्स दिल्ली-अहमदाबाद से बुलाए गए।

बरात फतह प्रकाश पैलेस से निकाली गई। जग मंदिर में सेहरा बंधाई की रस्म रजवाड़ा अंदाज में हुई। शादी के लिए चांदी के मंडप को पूरी तरह दीपों से सजाया गया। डेकोरेशन, साउंड और केटरर्स दिल्ली-अहमदाबाद से बुलाए गए थे। मेहमानों के लिए 30 से ज्यादा डिशेज बनाई गई। गेस्ट के पिक एंड ड्रॉप के लिए 500 से ज्यादा गाड़ियां और होटलों में 700 रूम बुक किए गए।

बिनोद के दादा राजस्थान के फतेहपुर में रहते थे। नेपाल जाकर उन्होंने कपड़ों की दुकान शुरू की। आज चौधरी फैमिली का बिजनेस कई देशों में है। फोर्ब्स के मुताबिक, चौधरी 840 करोड़ रुपए से ज्यादा की प्रॉपर्टी के मालिक हैं। फोर्ब्स ने 2016 के वर्ल्ड बिलियनेयर्स की लिस्ट में उन्हें शामिल किया था। आज चौधरी ग्रुप में करीब 16 हजार लोग काम कर रहे हैं। फोर्ब्स के मुताबिक, आज ये कंपनी करीब 774 करोड़ रुपए की हो चुकी है। बिनोद की पत्नी सारिका जयपुर से हैं। 2015 में इनके बेटे राहुल चौधरी की शादी भी मुंबई के बिजनेसमैन की बेटी सुरभि खेतान के साथ हुई थी। बिनोद के पिता लुनकरण दास ने कपड़े की दुकान को नेपाल के पहले डिपार्टमेंटल स्टोर में बदला। पिता के बीमार होने के बाद वह 18 की उम्र में पढ़ाई छोड़कर बिजनेस से जुड़ गए। तीन भाइयों में सबसे बड़े बिनोद ने बिजनेस की कमान संभालते ही चौधरी ग्रुप की नींव रखी। इसके साथ ही उन्होंने 1970 में एक नाइट क्लब शुरू किया। इसके बाद शराब इम्पोर्ट, पेपर सेल काम शुरू किया। ग्रुप आज इन्श्योरेंस, फूड, रियल एस्टेट, रिटेल और इलेक्ट्रॉनिक्स फील्ड में काम करता है।

कानोड़ को मिला तहसील का दर्जा

उदयपुर। जिले के कानोड़ कस्बे को तहसील बनाने की वल्लभनगर विधायक रणधीरसिंह भींडर ने घोषणा की। संघर्ष समिति और जनता के बीच भींडर ने कहा कि जयपुर में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया से प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने सकारात्मक सोच के साथ कानोड़ को तहसील बनाने के लिए हां भर दी है। विधायक भींडर ने मुख्यमंत्री के नाम से कानोड़ को तहसील बनाने की घोषणा ग्रामवासियों के सामने की।

वृद्धा बोली- तहसील के लिए मेरी जमीन ले लो

कानोड़ को तहसील बनाने की घोषणा पर कस्बे की 80 वर्षीय धापूबाई भी बहुत खुश हैं। उसके दो बेटे हैं पर दोनों की मानसिक स्थिति खराब है। परिवार की पीड़ा बताते वृद्धा भावुक हो गई। फिर बोली, तहसील भवन के लिए वह तुलसी अमृत रोड़ स्थित अपनी दो बीघा जमीन देने को तैयार है। विधायक ने यह सुना तो माला पहनाकर वृद्धा का स्वागत किया। वृद्धा की इस मंशा पर पूरे गांव में प्रशंसा हुई।

भींडर ने कहा कि कानोड़ और भींडर तहसील में कौन-कौन सी पंचायतें आएंगी, इसको तय करने के लिए सरकार ने यूडीएच मंत्री श्रीचंद कृपलानी, संभागीय आयुक्त भवानीसिंह देथा, स्वयं भीण्डर, जिला कलेक्टर रोहित गुप्ता और एसपी राजेन्द्रप्रसाद गोयल को मेंबर बनाते हुए एक कमेटी गठित की है जो इस काम को अंजाम देगी। विधायक की घोषणा के बाद कानोड़ में खुशी की लहर दौड़ गई और लोगों ने मिठाइयां बांटकर एक-दूसरे का मुंह मीठा कराया।

इस अवसर पर भाजपा बोर्ड के पालिका अध्यक्ष अनिल शर्मा, उपाध्यक्ष दिनेश शर्मा, मण्डल अध्यक्ष महावीर दक, पार्षद भवानीसिंह चौहान, नगर कांग्रेस उपाध्यक्ष मनोज भाणावत, सुभाष रांका, अनिकल कोठारी, नेता प्रतिपक्ष दिलीपसिंह सोलंकी, नगर कांग्रेस सचिव, सुनील चौबीसा, भजनलाल श्रीमाली, बजरंगदास वैष्णव, कोमल चौधरी, संघर्ष समिति संरक्षक अनिल भानावत, कानोड़ राजघराने के राव योगेश्वरसिंह सारंगदेवोत, तुलसी अमृत निकेतन के संचालक शांतिचन्द्र बाबेल, स्थानीय प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत, जनता सेना नगर अध्यक्ष रतनलाल लक्षकार, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सुशीला टेलर, पूर्व रंजना बाबेल, पूर्व पार्षद राजकुमारी कामरिया, जनता सेना पार्षद कोमल कामरिया, जनता सेना के कार्यकर्ता फिरोज भाटी, नगर यूथ कांग्रेस अध्यक्ष दिलीप सोलंकी, दिनेश जोशी, पार्षद सरोज व्यास, आशा जोशी, वरजूबाई मीणा, बंशीलाल जारोली, शशिकला शर्मा, इन्द्रा जैन, ख्यालिलाल बाबेल, गिरिजा शंकर व्यास बॉस, मणिशंकर व्यास, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, भगवतीलाल पुष्करणा, परसराम सोनी, शांतिलाल धींग, सुन्दरलाल जैन, जयप्रकाश व्यास, राजेन्द्र जैन, दिलीप बाबेल, लोकेश मल्हारा, लोकेश बाबेल, अशोक उपाध्याय आदि ने आभार व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि गत दिनों विधानसभा में मुख्यमंत्री ने भींडर को तहसील बनाने की घोषणा की थी तब से कानोड़वासी कानोड़ को तहसील बनाने की मांग पर अड़े हुए थे। कानोड़वासियों और संघर्ष समिति का 28 दिन पश्चात गुरूवार को आंदोलन खत्म हुआ।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।